जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 06 | जून - 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10
धर्म साधना का काल है...	- आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	11-12
पढमं नाणं...	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	13-14
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	15-16
अनाशक्त योगी, गणाधीश..	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	17-18
आगम का उजास...	- डॉ. दिलीप धींग	19-20
दरियादिली	- श्री संजीव जैन, करनाल	21-22
24 तीर्थंकर कल्याणक...	- श्री रतनचंद पोकरना जैन, चेन्नई	23-40
स्वागत गीत...	- सौ. सूरजबाई बोहरा जैन, चेन्नई	41
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा मार्च माह में सम्पन्न		43
समाचार प्रकाश		44-50
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449	10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108	12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन
श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई 94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री
श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि	
संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह
व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

प्रकाशनार्थ आलेख व समाचार कैसे हों ?

E-mail: ajvk1973@gmail.com

– अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री – जैन कॉन्फ्रेंस

आदरणीय पाठकगण-आत्मप्रिय बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र !

सामाजिक मूल्यों के विघटन के इस युग में जैन समाज आज भी तप, त्याग, चारित्र आदि में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए है। इसका बहुतांश श्रेय हमारे संत-सतियों को जाता है। गांव-गांव, नगर-नगर नंगे पांव घूमते हुए उन्होंने जैन धर्म की जो अलख जगायी है, उसी का यह प्रतिफल है कि इस विकट भौतिकवादी युग में भी हमारे समाज में आध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं।

गत चातुर्मास-काल में प्रकाशनार्थ प्राप्त समाचारों से यह सहज ही पता चल जाता है कि पूज्य संत-सतियों ने बच्चों एवं युवाओं को सुसंस्कारित करने के लिए अथक प्रयत्न किया है। समय-समय पर संस्कार शिविर, प्रश्नोत्तर-मंच आयोजित करने के साथ-साथ पूरे चातुर्मास काल में तपस्याओं की लड़ी का आयोजन एवं दैनिक शास्त्र-वांचन आध्यात्मिक प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित कर जिस तरह धर्म-प्रभावना की है, उसी का परिणाम है कि अनेक बाहरी आकर्षणों को नजर अंदाज कर नयी पीढ़ी सतत् धर्म की ओर उन्मुख हो रही है।

परन्तु पूज्यजनों द्वारा रोपा गया यह धर्म-बीज, जो अंकुरित होकर सतत् वृद्धि को प्राप्त हो रहा है, अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में मुरझा न जाये, यह सावधानी निहायत जरूरी है और इसके लिए समाज के वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं की जिम्मेदारी अपेक्षाकृत बढ़ जाएगी। इस चातुर्मास काल में पूज्यजनों की उपस्थिति के दर्म्यान ऐसे कार्यक्रम आयोजित करें जिनसे धर्मरूपी पौधा फूले-फले अगले चातुर्मास तक पहुंचते-पहुंचते सर्वत्र धर्म-जागरण दर्शन होने लगे।

इस काम में श्रीसंघों के वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं की सक्रियता दो रूपों में उपयोगी हो सकती है। एक, वे पूज्यजनों के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए गतीशील हो तथा समाज के जाग्रतजनों को धार्मिक गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए प्रेरित करें।

देशभर के समस्त श्रीसंघों के पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि इस काल में धर्म जागरण के जो भी कार्यक्रम आयोजित हो, उनके पूरे समाचार प्रकाशनार्थ प्रेषित करें। प्रकाशनार्थ सामग्री के बारें में अक्सर पत्रिका में चर्चा होती रहती है, किन्तु उससे अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है।

जहाँ तक प्रकाशनार्थ निबंध, कहानी, कविता की बात है, वह बहुधा मौलिक नहीं होती। यदि मौलिक होती भी है तो वही रचना अनेकों दूसरी पत्र-पत्रिकाओं में छपने के लिए भेजी गयी होती है। उसकी एक जिरॉक्स प्रति हमें भी भेज दी जाती है और अनेक बार हमें भेजी गयी जिरॉक्स प्रति का छापा इतना कमजोर अथवा भद्दा होता है कि ठीक से पढ़ने में भी नहीं आता है। ऐसी रचनाओं के साथ हम चाहकर भी न्याय नहीं कर पाते।

सभी लेखक-बन्धुओं से विनम्र प्रार्थना है कि आप सिर्फ अपनी मौलिक रचनाएँ और वे भी साफ-साफ लिखी अथवा टंकित की हुई ही प्रकाशनार्थ भेजें। जिरॉक्स प्रतियों पर विचार नहीं किया जाएगा, इस बात का ध्यान रखें।

प्रकाशनार्थ समाचारों के बारे में यह बताना जरूरी लगता है कि वहाँ जिरॉक्स प्रतियों का स्वागत है, किन्तु प्रति साफ-सुथरी और पढ़ने लायक हो। समाचार को सच में समाचार होना चाहिए और उसका विस्तार उसके महत्त्व से अधिक नहीं होना चाहिए। तपस्याओं की सूचना यदि तीन-चार फुलस्केप पन्नों में मिलने लगे तो ऐसी हालत में सम्पादक के लिए सबसे सरल मार्ग उसे नजरअन्दाज करना होता है। कृपया प्रकाशनार्थ समाचार भेजते समय इस बात का पूरा ध्यान रखें कि वह संक्षेप में हो, साफ-साफ लिखा गया हो और समय पर हमारे पास पहुँच जाये। भविष्य में प्रकाशनार्थ आलेख अथवा समाचार भेजते समय आप हमारी विनम्र प्रार्थना का पूरा आदर करेंगे, ऐसी आशा करते हैं। ❖❖

अध्यक्षीय उद्गार

E-mail : rjachallani@gmail.com

शुद्ध जैन परम्परा का ही प्रचार-प्रसार करें !

– आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण परम्परा में हमारे संत एवं सतियाँ आगामी जुलाई माह में वर्षावास शुरू करेंगे। यह उल्लेखनीय है कि स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय से जुड़े संत तथा सतियां आध्यात्मिकता में तो शीर्ष पर हैं ही, अनेक साधु-साध्वियों ने एम. ए. और पी.एच.डी. तक की लौकिक शिक्षा भी प्राप्त की है।

ऐसे प्रबुद्ध, संयमी और आध्यात्मिक जनों का सान्निध्य आगामी 20 जुलाई में इस बार करीब चार महीने के लिए हमें प्राप्त होने जा रहा है। पूज्य जनों के चातुर्मास की विस्तृत सूची समय-समय पर 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित होती रहेगी। चातुर्मास स्थलों से जुड़े श्रावक-श्राविकाओं एवं पदाधिकारियों का यह कर्तव्य है कि इस सुअवसर के हरेक क्षण का अधिक से अधिक उपयोग हो।

एक बात जो खासकर देखने में आती है, वह यह है कि सारे साधनों की सुलभता के बावजूद जैन धर्म व उसकी शिक्षाओं का सामान्य लोगों में उतना प्रचार-प्रसार नहीं हो पाया है, जितना संभव था। मेरा मत है कि हम अपने साधनों का उतना उपयोग नहीं कर पाते, जितना ऐसे प्रचार-प्रसार के लिए जरूरी होता है। भौतिक साधनों की बात छोड़ भी दें तो भी जिस स्थानकवासी श्रमण परम्परा के विरक्त एवं प्रज्ञा-सम्पन्न श्रमण श्रमणी निरन्तर पाद-विहार करते हुए धर्माराधना कर रहे हों, उस जैन धर्म का प्रचार-प्रसार एवं प्रभाव कम नजर नहीं आता है और, इसीलिए मैं समस्त स्थानकवासी श्रावक-श्राविकाओं एवं श्रीसंघों से निवेदन करता हूँ कि वे इस चातुर्मास के लिए ऐसे आयोजन करें जिनकी बदौलत न सिर्फ जैन धर्म का प्रचार-प्रसार हो बल्कि स्थानकवासी श्रमण-सम्प्रदाय उससे जुड़े श्रीसंघ तथा जैन कॉन्फ्रेंस समाज में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक क्रांति के संदेशवाहक बनें।

मेरा पहला सुझाव है कि श्रीसंघों के पदाधिकारी अपने यहाँ चातुर्मासार्थ विराजने वाले संत-संतियों के परामर्श में अगले चार माह का विस्तृत कार्यक्रम पहले से ही तैयार कर लें और उसे अपने श्रावक-श्राविकाओं तथा मित्रों तक पहुंचा दें। कार्यक्रम में जो विशेष बातें हों उन्हें प्रकाशनार्थ 'जैन प्रकाश' में भेजें ताकि लाभ लेने के इच्छुकजन अपना व्यक्तिगत प्रोग्राम भी उसी अनुसार बना सकें।

हमें स्थानीय स्तर पर विविध कार्यक्रम आयोजित करने होंगे। जैन धर्म एवं दर्शन को सुलझे हुए किन्तु प्रभावी विद्वानों तथा वक्ताओं को बुलाकर चातुर्मास के दरम्यान सार्वजनिक स्थलों पर व्याख्यान मालाएं आयोजित करें और स्थानीय अजैन गृहस्थों को उनमें आमंत्रित करें। व्याख्यान मालाओं के विषय आज की ज्वलंत समस्याओं पर हों जिन पर जैन-दृष्टि से समाधान प्रस्तुत किया जाये।

अपने अड़ोस-पड़ोस के विविध संस्था संगठनों, विशेषकर स्कूल-कालेजों को प्रेरित करें कि वह हमारे संत-सतियों को प्रवचन के लिए आमंत्रित करें। प्रवचन देने वाले श्रमण-श्रमणी सम्प्रदाय-वाद से ऊपर उठकर शुद्ध जैन-परम्परा का ही प्रचार-प्रसार करें।

स्थानीय स्तर पर मुहल्लों, स्कूलों, कॉलेजों आदि में वक्तृत्व अथवा निबंध स्पर्धा भी आयोजित की जा सकती है। ऐसी स्पर्धाओं में उच्च स्थान प्राप्त करने वालों को श्रीसंघ पुरस्कृत करें।

संत-सतियों के सान्निध्य का लाभ लेकर हम एक ऐतिहासिक शुरूआत करने जा रहे हैं, उनकी सहूलियतों का हमेशा ध्यान रखें। उनके अध्ययन-अध्यापन की जिम्मेदारी श्रीसंघों की है और ऐसी व्यवस्था करना उनका न सिर्फ नैतिक दायित्व है, बल्कि एक धार्मिक कर्तव्य भी है। आशा है आप इस जिम्मेदारी को पूरा करने की भरसक कोशिश करेंगे। ❖❖

जैन-धर्मावलम्बियों के लिए
धर्म-साधना का काल है चातुर्मास

- आचार्य सम्राट पू. श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

चातुर्मास, चार अक्षरों का चातुर्मास, चार अक्षरों का एक छोटा-सा शब्द है, लेकिन अपने इस सूक्ष्म कलेवर में अनेक प्रेरणाओं/रहस्यों को छिपाये हुए है। सांसारिक दृष्टि से भी और आध्यात्मिक दृष्टि से भी।

इसका शब्दार्थ होता है-चार मास, चार महीने। लेकिन वर्ष में तो बारह मास होते हैं और बारह मास में तीन चातुर्मास आते हैं-श्रावण से कार्तिक तक अर्थात् आषाढी पूनम से कार्तिक पूनम तक, फिर मृगसर से फाल्गुन तक। यह फाल्गुन पूर्णिमा होली चौमासी कहलाती है। फिर चैत्र से आषाढ़ तक यह ग्रीष्म कालीन चौमासा है। किंतु यहां पर 'चातुर्मास' से वर्षा ऋतु के चार मास की और संकेत है। ये चार मास हैं-श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन चार महीनों में बरसात होती है, ये वर्षा ऋतु के महीने माने जाते हैं। चातुर्मास शब्द से इन्हीं चार महीनों की ओर संकेत किया गया है।

श्रवण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक बरसात के इन चार महीनों का प्राणी जगत में तो महत्व है ही, जड़-जगत में भी बहुत महत्त्व है, इनकी अनिवार्य उपयोगिता है।

वैशाख और ज्येष्ठ मास में सूर्य के प्रखर ताप से तपे हुए तवे की तरह पृथ्वी जलने लगती है, सिर पर चिलचिलाती धूप-आग की ज्वाला जैसी, गर्म-गर्म लू की लपटें चलती हैं। सदानीरा नदियों का जल सूख जाता, वे पतली धारा बन जाती हैं, कुओं का जलस्तर नीचे उतर जाता है। मानव क्या, प्राणी मात्र ही त्राहि-त्राहि करने लगते हैं। भीषण ग्रीष्म के कारण अनेक रोग भी फैलते हैं। ग्रीष्म ऋतु का वातावरण शारीरिक एवं मानसिक दोनों दृष्टियों से उत्तेजनापूर्ण तथा उद्विग्नता भरा रहता है।

इन सब उत्तेजनाओं से त्राण दिलाती है, आकाश से रिमझिम बरसती बूंदें। कालिदास ने तो अपने मेघदूत काव्य में मेघ को दूत बनाकर ही संदेश भेजा था। उनका हृदय मेघों के दर्शन मात्र से तरंगित हो उठा था और लेखनी से कमनीय कल्पना प्रसूत होने लगी थी। बादलों की रिमझिम का प्रभाव बच्चों के मन पर भी खूब होता है, उनके तन-मन उमंग से भर जाते हैं। वे हँसते-किलकारी भरते रिमझिम बूंदों में नहाते आनंदित होते हैं।

बरसात होने का एक परिणाम यह होता है कि मार्ग अवरूद्ध हो जाते हैं, पानी भर जाता है और आवागमन रूक जाता है।

प्राचीन भारत में तो यह स्थिति थी ही, गांवों में अब भी है। किन्तु नगरों में भी जहां वैज्ञानिक उन्नति का प्रकाश पहुँच चुका है, वहां भी स्थान-स्थान पर पानी भर जाता है। नाले उफनने लगते हैं। अतः निराबाध आवागमन की समस्या वहां भी खड़ी हो जाती है।

लेकिन बरसात का एक सुखद परिणाम यह होता है कि ग्रीष्म का ताप कम हो जाता है, गर्मी में चलती लू सुखद समीर का रूप ले लेती है। मानव का तन-मन प्रफुल्लित हो जाता है। प्रफुल्लित तन-मन में शुभ भावनाए अंगड़ाई लेने लगती हैं। फलतः कषायों की अग्नि भी मंद पड़ जाती है। क्षमा की शीतलता का अनुभव होने लगता है।

वर्षा की रिमझिम करती बूंदें जब कोमल मिट्टी पर गिरती हैं तो उस माटी में अपूर्व उर्वरा शक्ति जाग उठती है। किसान खेतों की समृद्धि के सपने संजोये बीज बोता है। बीजों को अंकुरित पल्लवित पुष्पित होने की आशा लगाकर बड़ी उमंग से श्रम करता है। 'दादुर मोर किसान मन लगा रहे घन ओर'।

मौसम की दृष्टि से वर्षा ऋतु समशीतोष्ण होती है। इसलिए कृषिकार्य के लिए तो प्रकृति सर्वथा अनुकूल होती ही है।

किंतु ऋषि-कार्य के लिए भी अर्थात् धर्म के बीज बोने के लिए भी यह ऋतु सर्वथा अनुकूल रहती है। इसीलिए संतजन एक स्थान पर स्थिर होकर मानक-मन की कोमल भूमि उपदेशों द्वारा तैयार करते हैं और फिर उसमें धर्म के, शुभ

संकल्पों एवं उत्तम सरकारों के बीज बोते हैं। जीवन-क्षेत्र को धार्मिकता के वातावरण से हरा-भरा बना देते हैं। कबीरदास के शब्दों में -

कबिरा बादल प्रेम का,
हम पर बरखा आई ।
अंतर भीगी आतमा,
हरी-भरी वनराई ।।

इन शुभ भावनाओं की वर्षा संत-सती और श्रमण-श्रमणी के सम्पर्क और सत्संगति से होती है।

साधु-संन्यासी और विशेष रूप से जैन श्रमण-श्रमणी चातुर्मास में विहार नहीं करते, एक स्थान पर रहकर ही धर्म की गंगा बहाते है। यह उनका कल्प है, आचार है, मर्यादा है।

इस मर्यादा का कारण है - वर्षाऋतु में जीवों की अधिक उत्पत्ति हो जाना। आवागमन से उन सूक्ष्म जीवों की हिंसा न हो जाय, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो, इस दया और अहिंसा की भावना से श्रमणजन एक स्थान चार महीने वास करते हैं। इसे उनका वर्षावास या चातुर्मास कहा जाता है।

वर्षावास की ऐसी ही परम्परा वैदिक और बौद्धधर्म में भी पाई जाती है। प्राचीनकाल में वैदिक संन्यासी, परिव्राजक और बोद्धि भिक्षु एक ही स्थान पर रहते थे, वर्षा ऋतु में गमनागमन नहीं करते थे।

महाभारत में भी ऐसे प्रसंगों का उल्लेख है और तथागत बुद्ध ने तो अपने-भिक्षुओं को वर्षावास में स्थिरवास करने की प्रेरणा कई स्थलों पर दी। लेकिन काल के अंतराल से वैदिक साधु-संन्यासी और बौद्ध भिक्षुओं में वर्षावास के विषय में शिथिलता आ गयी, जबकि जैन साधु-साध्वी वर्षावास के नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन करते रहे हैं।

लेकिन साथ ही भारत की ये तीनों परम्पराए एक बात में एकमत है कि कोई लौकिक शुभ कार्य इन दिनों में नहीं किये जाते। विवाह आदि नहीं होते।

वैदिक परम्परा ने इसका कारण यह बताया कि चातुर्मास में देव सो जाते हैं। देव से वैदिक परम्परा में अभिप्राय विष्णुजी से है।

वैदिक पुराणों में उल्लेख है कि विष्णु भगवान आषाढ़ शुक्ल 11 को सो जाते हैं और कार्तिक शुक्ला 11 को उनकी नींद टूटती है, सुषुप्ति से जाग्रत अवस्था में आते है और उनकी जाग्रत दशा में ही विवाह आदि लौकिक शुभ कार्य किये जाने चाहिए, सुषुप्ति दशा में नहीं। उन्हें जागने की तिथि कार्तिक शुक्ला 11 को 'देवात्थान' कहा जाता है और वैदिक परम्परा के अनुयायी इस दिन हर्षोत्सव मनाते हैं।

ये कारण तो अपनी-अपनी परम्परा और धारणा के अनुसार है, लेकिन उद्देश्य तो एक ही है कि वर्षाऋतु में लौकिक शुभकार्य भी नहीं किये जाते। अतः धर्म साधना का अवसर अधिक मिलता है। चातुर्मास का आध्यात्मिक महत्व तो और भी अधिक है।

वैदिक परम्परा में श्रवण मास को शिवजी का मास माना गया है। श्रावण शुरू होते ही मंदिरों के घंटे-घड़ियाल बज उठते हैं। संपूर्ण भारत में श्रावण मास के चारों सोमवारों को शिवजी की विशेष उत्साह से पूजा-अर्चना की जाती है। पूरे श्रावण मास तो चलती ही रहती है

इसी प्रकार भाद्रपद कृष्णा अष्टमी को श्रीकृष्ण जन्म दिवस के रूप में संपूर्ण भारत में मनाया जाता है।

यो भाद्रपद विष्णु या श्रीकृष्ण का महीना है।

आश्विन मास देवी-पूजा के लिए निश्चित है। कलकत्ते (बंगाल) की काली-पूजा बहुत प्रसिद्ध है। नौ दिन का विराट उत्सव मनाया जाता है। दसवें दिन दशहरे का विशाल उत्सव होता है, जिसमें हजारों व्यक्ति भाग लेते हैं।

देवी-पूजा, नवरात्रि, नवदुर्गा और दशहरा यह तो संपूर्ण भारत में मनाये जाने वाला पर्व है। दशहरे के लिए कहा जाता है कि इस दिन श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। इसी तरह कार्तिक मास में दिवाली हिंदुओं का सबसे बड़ा पर्व आता है।

इस रूप में धर्म जागरणा धार्मिक उत्साह वैदिक अथवा सनातन धर्मावलम्बियों में भी, वर्षा के चार मासो में खूब होता है।

लेकिन जैन धर्मानुगागियों के चातुर्मास वर्षा के चार महीनों में होने वाली धर्म जागरण, धर्म-साधना और धर्मोत्साह का रंग ही कुछ अनूता अलग रंग लिये है।

❖❖

पढमं नाणं...

- आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

इस जगत में पाने जैसा हुछ भी नहीं है। जो पाने जैसा है वह आपने पाया ही हुआ है। मात्र स्मृति को स्वच्छ करना है। मात्र स्मरण जग जाए, आपके भीतर की परम संपदा आप ही हैं। इस स्मरण के जगते ही आपके आंसू सूख जाएंगे। आप पहचान लेंगे कि आप स्वयं सम्राट है।

भगवान महावीर ने फरमाया है - **'पढमं नाणं तवो दया'** प्रथम ज्ञान आवश्यक है। उसके बाद ही जीवन में करुणा और अहिंसा के फूल खिल सकते हैं।

क्या है ज्ञान? ज्ञान की हमें क्यों आवश्यकता है? सर्वप्रथम तो यह जान लेना आवश्यक है कि जिसे आज तक हमने ज्ञान के नाम पर संग्रहित किया है वह ज्ञान नहीं है। ज्ञान के नाम पर आप किताबों का लिखा और श्रुतियों का सुना अपनी स्मृति पर संचित करते रहे हैं पर स्मरण रखें, जो बाहर से संचित किया जाए वस्तुतः वह ज्ञान नहीं है। ज्ञान कभी संचित नहीं किया जा सकता है। ज्ञान को तो जागृत किया जाता है। आप स्वयं ज्ञान रूप है। अनन्त ज्ञान के महानद आपकी आत्मा के गर्भ में बह रहे हैं। उन्हें जन्म देना है, उन्हें प्रगट करना है।

भगवान महावीर ने जिस ज्ञान की बात कही है उस ज्ञान का अर्थ है कि आप स्वयं को पहचान लें। आपके भीतर स्मृति जग जाए अपने स्वरूप की। आत्म स्मरण ज्ञान है। आत्म विस्मरण अज्ञान है। जो-जो साधन आपका आत्म विश्वास में ले जाते हैं वे सब अज्ञान हैं। आप ज्ञान के नाम पर इतना कुछ बाहर से संग्रहित कर लेते हैं कि उस संग्रह के आवरणों से आपकी आत्मा दब जाती है। अक्सर मैं बड़े-बड़े विद्वानों को देखता हूँ। उन्हें बहुत कुछ स्मरण होता है। बहुत-सी भाषाएं वे जानते हैं, परंतु आत्मानुभव के तल पर वे एकदम कोरे होते हैं। इतनी जानकारियाँ वे संग्रहित कर लेते हैं कि उन जानकारियों के तले आत्मतत्व की जानकारी की बात गौण हो जाती है। अपने सिवाय वे सब जान लेते हैं, परंतु मैं कहता हूँ, आत्म-ज्ञान के बिना समस्त बाह्य-ज्ञान भार है। उस भार से आपको सम्मान मिल सकता है पर कल्याण नहीं मिल सकता है। उससे आपको सुख साधन मिल सकते हैं पर आत्म शांति नहीं मिल सकती है। ज्ञान का अर्थ आत्म स्मरण। आत्म स्मरण ही मोक्ष है और आत्म विस्मरण ही संसार है। आत्म स्मृति के क्षण में आप परमात्मा हैं और आत्म विस्मृति के क्षण में आप संसारी हैं। आप मोक्ष को साधने के लिए बड़ी-बड़ी साधनाएं करते हो। परमात्मा को पाने के लिए कितने-कितने उपाय और अनुष्ठान करते हो। परंतु मेरी दृष्टि में कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। मोक्ष को साधने और परमात्मा को उपलब्ध होने का सीधा-सा ढंग है कि आप अपने को पहचान लें। क्योंकि आप स्वयं परमात्मा हैं। अपने को पहचानना भर है। आपकी स्मृति का जाग जाना पर्याप्त है। स्वयं के संदर्भ में जैसे ही आपकी स्मृति स्वच्छ बनती है वैसे ही आप पाते हो कि आप जहाँ खड़े हैं, आपके पगतलों के तले ही मोक्ष है।

परमात्मा आपका स्वभाव है और अपने स्वभाव से आप कभी शून्य नहीं बन सकते हो। आप विभाव में कितनी ही दूर तक बह जाओ पर विभाव आपका स्वभाव नहीं बन सकता है। जल को कितनी देर तक गर्म रखा जा सकता है? जल को सदा-सर्वदा के लिए गर्म नहीं रखा जा सकता है। क्योंकि ऊष्णता जल का स्वभाव नहीं है। जल का स्वभाव शीतलता है। जब तक विभाव की आग जल-पात्र के नीचे जल रही है तभी तक जल ऊष्ण रह सकता है। जैसे ही विभाव की आग जल-पात्र के नीचे से खिसकती है वैसे ही जल अपने स्वभाव में लौट आता है। ठीक ऐसे ही संसारी होना आपका स्वभाव नहीं है। अज्ञान आपका स्वभाव नहीं है। दुःख, अशांति और अंधकार आपका स्वभाव नहीं है। आनंद, आलोक और ज्ञान आपका स्वभाव है। उस स्वभाव को उपलब्ध होना है। स्वभाव को उपलब्ध होते ही आप परमात्मा को उपलब्ध हो जाते हैं। **'अप्पा सा परमप्पा'** आपकी आत्मा में आवृत्त परमात्मा अनावृत बन जाता है। स्मरण रखें, ज्ञान का यह अर्थ नहीं है कि आप बहुत-सी किताबें पढ़ लें, बहुत-सी भाषाएं सीख

लें या फिर बहुत से शास्त्र कण्ठस्थ कर लें। यह तो सब उधार ज्ञान है। यह तो तोतारंटत होगा सब। इस ज्ञान का कोई मूल्य नहीं होगा। आप पुकारते रहेंगे कि मैं परमात्मा हूँ, मैं परमात्मा हूँ, परंतु परमात्मत्व का कोई रस आपकी जीभ में नहीं उतर पाएगा। आप पुकारते रहेंगे पर उस पुकार से आपके प्राणों में कोई जागृति न उतरेगी।

कहते हैं कि एक स्वतंत्रता सेनानी ने अपने घर में एक तोता पाल रखा था। स्वतंत्रता सेनानी के घर अक्सर स्वतंत्रता सेनानियों की बैठके होती रहती थी। वहाँ पर 'स्वतंत्रता' और इंकलाब' जैसे शब्द पुनः पुनः दोहराए जाते थे। बार-बार इन शब्दों को सुनकर उस पिंजरे में बंद तोते ने भी इन शब्दों को दोहराना शुरू कर दिया। वह दिन भर चिल्लाता रहता, स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता, इंकलाब जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद।

एक बार कारागृह में लम्बा समय बिताकर लौटे एक सवतंत्रता सेनानी के कानों में उस तोते के वे शब्द पड़े। तोते के मुख से स्वतंत्रता...स्वतंत्रता की पुकार सुनकर वह करुणार्द्र बन गया। कारागृह की कष्टपूर्ण जिंदगी की कटु स्मृतियाँ उसकी स्मृति पर उतर आईं। तोते की स्थिति पर उसे बड़ा कष्ट हुआ। उसने झट से उस तोते का पिंजरा खोल दिया। उसने देखा, 'स्वतन्त्रता...स्वतन्त्रता' शब्द को दोहराते हुए वह तोता खुले आकाश में उड़ गया।

स्वतन्त्रता सेनानी बड़ा प्रसन्न हुआ। उसकी आत्मा को बड़ा सुख मिला। खुले आकाश में किलोलें करते हुए और 'स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता' शब्द को दोहराते हुए उस तोते को वह एकटक बनकर देखता रहा। पर कुछ ही पल बीते थे कि वह तोता 'स्वतन्त्रता-स्वतन्त्रता' शब्द को रटता हुआ पुनः पिंजरे में आ बैठा। उसे देखकर स्वतंत्रता सेनानी हैरान रह गया। उसने कहा, झूठी है तुम्हारी पुकार! तुम सुना हुआ दोहरा रहे हो।

❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 जून से 20 जुलाई 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस

आचार्य श्री काशीरामजी म.सा.	05 जुलाई
श्रुताचार्य श्री चौथमलजी म.सा.	08 जुलाई
मेवाड केसरी श्री मोहनलालजी म.सा.	13 जुलाई
अभिग्रहधारी श्री वेणीचंदजी	15 जुलाई
प. रत्न श्री रोशनलालजी म.सा.	08 जुलाई
आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा.	11 जुलाई
आचार्य श्री पन्नालालजी म.सा.	15 जुलाई
आचार्य श्री रायचंदजी म.सा.	18 जुलाई

आत्मोद्धारक दीक्षा दिवस

प्रवर्तक श्री रतनमुनिजी म.सा.	05 जुलाई

पुण्य स्मृति दिवस

व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म.सा.	27 जून
उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी म.सा.	15 जुलाई

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

एक संत को किसी ने बढ़िया जूती दी। संत जूती पहन बाजार में गया। तो सबने जूती देखकर कहा, जूती तो बढ़िया है पर कपड़े सादे हैं। संत ने कहा अभी बढ़िया जूती पहनूं फिर महंगे कपड़े बनवाने पड़ंगे फिर अच्छी टोपी लानी होगी। ऐसी जूती को कौन पहने।

सिद्धांत - एक चीज के पीछे दस इच्छाएं जुड़ जाती हैं, इसलिए तू पहली इच्छा का ही गला घोंट दें।

❖❖

(गतांक से आगे ...)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

इस सम्मेलन में हमारे द्वारा तैयार की हुई जैन ज्योतिष तिथि पत्रिका, जैन कॉन्फ्रेंस की टीम तथा उपस्थित की जाने वाली किसी भी अन्य टीम अथवा तिथि पत्रिका पर विचार करके उसमें आवश्यक संशोधन किये जावें। उक्त सम्मेलन जिस पंचांग को भी सर्वसम्मति से पास कर देगा। जैन कॉन्फ्रेंस का यह कर्तव्य होगा कि वह उसको समस्त भारत में प्रचलित कराकर उसको कार्य रूप में परिणत करें। यदि जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से एक वर्ष के अन्दर सम्मेलन के लिये प्रयत्न न किया गया तो एक वर्ष के पश्चात् हम उसकी टीम को मानने के लिये पाबन्द न होंगे।

"जैन संघ की एकता के लिये मैं पत्री के प्रश्न को स्थगित कर देने को तैयार हूँ, परन्तु यह एकता लूली-लंगड़ी नहीं होनी चाहिये। आप मेरे कहे अनुसार समस्त भारत के स्थानकवासी जैन मुनिराजों का एक सम्मेलन कराने का अविलम्ब प्रयत्न आरम्भ कर दें। इसी प्रकार स्थानकवासी जैन समाज के संगठन की सुदृढ़ नींव डाली जा सकती है। जब तक स्थानकवासी जैन संघ के सभी सम्प्रदायों की एक प्ररूपणा तथा एक समाचारी न होगी तब तक समाज का अन्धकारपूर्ण भविष्य प्रकाशमान नहीं बन सकेगा।" इस पर प्रतिनिधि मंडल ने पूज्यश्री से इस विषय में पूर्ण सहमति प्रकट करते हुए उनको विश्वास दिलाया कि ऐसे सम्मेलन के लिये अविलम्ब प्रयत्न आरम्भ किया जावेगा।

डेपूटेशन ने 16 अप्रैल के **'जैन प्रकाश'** में अमृतसर की इस भेंट के पूर्ण विवरण को देते हुए समाज से अपील की कि वह 'अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन' को बुलाने के लिये पूर्ण शक्ति से प्रयत्न करें। वास्तव में अभी तक यह योजना काफी दिनों से ढ़ीली-ढ़ीली सी चल रही थी।

लोगों के मन में विचार तो था, किन्तु उसे कार्य रूप में परिणित करने का साहस किसी को भी नहीं था। समाज को इस सम्बन्ध में एक गहरी प्रेरणा की आवश्यकता थी, जो उसको ठीक समय पर श्री पूज्य सोहनलालजी महाराज से मिल गई। इस प्रेरणा के बाद समाज में वास्तव में बल आ गया और यह योजना बद्धमूल हो गई। अब सारे सभा में 'अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन' बुलाने को आन्दोलन आरम्भ हो गया।'

प्रथम साधु सम्मेलन की भूमिका : अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का डेप्यूटेशन अमृतसर से आते ही अपने काम में लग गया। उसने अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की एक जनरल कमेटी बुलाई। जैन कॉन्फ्रेंस की कमेटी का यह अधिवेशन 11 तथा 12 अक्टूबर 1931 को दिल्ली में हुआ। इसमें कमेटी ने यह स्वीकार किया कि **'अखिल भारतीय साधु सम्मेलन'** को बुलाने की वास्तव में बड़ी भारी आवश्यकता है। अतएव उसने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिये एक उपसमिति बना दी। इस बैठक में यह भी तय किया गया कि अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन यथा संभव फाल्गुण संवत् 1988 में किया जावे। इसके अतिरिक्त यह भी तय किया गया कि जैन कॉन्फ्रेंस की अगली बैठक अप्रैल 1932 में हो, जिसमें उक्त उपसमिति द्वारा बनाई हुई योजना पर विचार किया जावे। उपसमिति का संयोजक आगरा के सेठ अचलसिंह को बनाया गया। सेठ अचलसिंह ने जैन कॉन्फ्रेंस के इस निश्चय के सम्बन्ध में जैन पत्रों में विज्ञप्ति भी प्रकाशित करा दी, जिससे सारे समाज में उत्साह की लहर दौड़ गई।

अब तो भारत के सभी प्रान्तों में प्रान्तीय सम्मेलन करके इस विषय में प्रयत्न किया जाने लगा। सर्वप्रथम राजकोट प्रांतीय साधु-सम्मेलन तथा पाली मारवाड़ मुनि-सम्मेलन करने का निर्णय लिया गया। इसी बीच में माघ सुदी 13 संवत् 1988 तदनुसार 20 फरवरी 1932 को साधु सम्मेलन समिति सभा ने जयपुर की अपनी बैठक में निश्चय किया कि अखिल भारतीय मुनि-सम्मेलन के लिये अजमेर के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया जाए, क्योंकि अजमेर भारत के मध्य भाग में है, जहाँ भारत के सभी भागों के जैन मुनि विहार करके पहुँच सकते हैं।

पंजाब प्रांत मुनि सम्मेलन : बहुत कुछ विचार-विमर्श के उपरान्त यह निश्चय किया गया कि पंजाब के मुनियों का एक सम्मेलन चैत्र कृष्ण 6, 7 तथा 8 संवत् 1988 को होशियारपुर में किया जावे। इस समाचार से पंजाब के मुनि संघ में उत्साह की लहर दौड़ गई। समय कम था अतएव प्रायः मुनिराज यह समाचार पाकर शीघ्रतापूर्वक होशियारपुर आने लगे। सर्वश्री उपाध्याय आत्मारामजी महाराज, युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज, गणी उदयचन्दजी महाराज, पंडित श्री नेकचन्दजी महाराज, पंडित विनयचन्दजी महाराज, पं. नरपतरायजी महाराज, पंडित श्री रामस्वरूपजी महाराज आदि मुनिराज अपनी-अपनी शिष्य मण्डली के साथ होशियारपुर पधारे। इस प्रकार यह सम्मेलन पंजाब के इतिहास में पहला ही था। सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ होने पर सर्वसम्मति से गणी उदयचन्दजी महाराज को उसका सभापति चुना गया। उन्होंने अपने सफल नेतृत्त्व में सब कार्य शान्तिपूर्वक चलाया। प्रत्री और परम्परा के कटुतापूर्ण लम्बे संघर्ष के पश्चात् दोनों पक्ष के मुनि प्रथम बार होशियापुर सम्मेलन में एकत्रित हुए। संघ में सभी निर्णय सर्वसम्मति से किए गए।

इस सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पास किये गये, जिनमें से कुछ मुख्य प्रस्ताव यह थे :- **प्रस्ताव 1** : श्री सुधर्मागच्छाचार्य श्री मुनि पूज्य सोहनलालजी महाराज संघ के परम हितैषी तथा दीर्घदर्शी हैं। आपकी अत्यन्त कृपा और विचार शक्ति द्वारा श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ने उत्साहित होकर वृहत् मुनि-सम्मेलन की नींव डाली और सब प्रान्तों में जागृति की, जिसका विवरण जैन प्रकाश पत्र में देख सकते हैं। पंजाब संघ जो कुछ समय से बिखरा हुआ था, आपश्री की कृपा से ही प्रेम सूत्र में बँध गया। जो संघ कल तक परस्पर तर्क-वितर्क में उलझा हुआ था आज सहानुभूति तथा जैन धर्म के प्रचार कार्य में लगा हुआ दिखलाई दे रहा है। **प्रस्ताव 2 :** अखिल भारतीय जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से प्रकाशित पक्खी-पत्र की प्रतिरूप पक्खी पत्र प्रकाशित किया जाना चाहिए।

प्रस्ताव-उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज
अनुमोदक-प्रवर्तिनी आर्याश्री पार्वती जी महाराज

प्रस्ताव 3 : सब आचार्यों के ऊपर एक प्रधानाचार्य होना चाहिये। इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पास कर, उसे वृहत् सम्मेलन में उपस्थित करने का निश्चय किया गया। **प्रस्ताव 4 :** प्रत्येक गच्छ में एक आचार्य होना चाहिये और सब आचार्यों के ऊपर एक प्रधानाचार्य होना चाहिये। उसके नीचे मुनियों की एक काउंसिल होनी चाहिये। युवाचार्य कांशीरामजी महाराज के इस प्रस्ताव को सर्व-सम्मति से पास करके वृहत् सम्मेलन में उपस्थित करने का निश्चय किया।

इसके अतिरिक्त मुनियों, आर्याओं तथा श्रावकों के संगठन तथा व्रत पालन आदि के सम्बन्ध में भी अनेक प्रस्ताव पास किये गए। होशियारपुर सम्मेलन का लाभ उठाकर पंजाब के मुनि संघ को पूर्णतया सुसंगठित तथा नियमबद्ध बना लिया गया। वर्तमान आचार्य के वार्षिक पाट महोत्सव को भी मनाने का निश्चय किया गया। यह भी निश्चय किया गया कि अजमेर सम्मेलन में पत्री का प्रश्न उपस्थित हो तो पंजाब के मुनि उसका विरोध न करें। आपस के संघर्ष को वहाँ न छेड़ा जावे। इस बात को सब मुनियों ने मान लिया और कहा कि हम पत्री का विरोध नहीं करेंगे। उन्होंने यह भी निर्णय किया कि मुनि-सम्मेलन में बहुमत से किये हुए प्रत्येक निर्णय उनको मान्य होंगे। इस सम्मेलन में अजमेर में होने वाले अखिल भारतीय मुनि-सम्मेलन में जाने के लिए पाँच प्रतिनिधियों का निर्वाचन भी किया गया।

होशियारपुर सम्मेलन के पश्चात् वहाँ से सभी प्रतिनिधियों ने अजमेर की ओर विहार कर लिया गया। मार्ग पर्याप्त लम्बा था। कहाँ पंजाब और कहाँ मारवाड़? बड़ी लम्बी और कठोर यात्रा थी, किन्तु जैन मुनि आत्मिक कर्तव्य की तुलना में शारीरिक कष्ट की चिन्ता नहीं किया करते। प्रतिनिधियों में गणी श्री उदयचन्दजी म.सा. ही सबसे वृद्ध थे। उनका शरीर रोगग्रस्त भी था, किन्तु उनका मन रोगी नहीं था। अतएव उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज तथा युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज के समान तेज न चलते हुए भी वह अपने मार्ग पर आगे बढ़ते गए। प्रायः प्रतिनिधियों ने 1988 का चातुर्मास अजमेर के मार्ग में ही किया। गणी उदयचन्दजी ने यह चातुर्मास रामपुरा में किया। चातुर्मास समाप्त होने पर उन्होंने फिर अजमेर की ओर विहार कर दिया। बाकी लोग मालेरकोटला, नाभा, कैथल, दिल्ली, अलवर, जयपुर तथा किशनगढ़ में धर्म प्रचार करते हुए अजमेर पहुँचे। *(... क्रमशः)*

साभार :- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

कालजयी व्यक्तित्व : घोर तपस्वी श्री मिश्रीलालजी महाराज (जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. की सम्प्रदाय के)

भगवान् महावीर की श्रमण-परम्परा में अनेक ऐसे श्रमण-साधक हुये हैं, जिन्होंने अपने श्रेष्ठ-ज्येष्ठ कृतित्व और व्यक्तित्व के बल पर इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है। उन्हीं मुनियों की परम्परा में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में एक महान् मुनि हुए - घोरतपस्वी श्री मिश्रीलालजी महाराज।

घोर तपस्वी श्री मिश्रीलालजी महाराज अपने युग के सर्वाधिक चर्चित मुनिराज रहे। प्रिंट मीडिया जब अपने शैशव काल में था, उस समय भी पूज्यश्री का व्यक्तित्व विश्वभर की पत्र-पत्रिकाओं में अर्चित और चर्चित हुआ था। उस चर्चा और अर्चा के केन्द्र में था-महामुनिराज का वह जीवन सत्याग्रह जो उन्होंने जैन एकता के लिए शुरू किया था। जब उन्होंने ही वेश और एक ही धर्म का अनुगमन करने वाले श्रमण-समाज को भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों और मान्यताओं में जकड़े हुए देखा तो उनका मानस खिन्न हो उठा। उन्होंने अपने उपदेशों और पावन प्रेरणाओं से संघीय-एकता का बिगुल बजाया, परन्तु सामाजिक समन्वय का जैसा स्वरूप वे चाहते थे, उस सन्दर्भ में परिणाम शून्य ही रहा। तब उन्होंने सोए हुए समाज को जगाने के लिए सत्याग्रह का मार्ग चुना। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक बार सत्याग्रह स्वरूप लम्बे-लम्बे तप किए। कहना चाहिए कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संघ-समन्वय के लिए सत्याग्रह की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिया।

आज से लगभग 123 वर्ष पूर्व वि.सं. 1947 (सन् 1890) में राजस्थान प्रांत के अलवर शहर के निकटवर्ती 'हरसोरा' ग्राम में ओसवाल जातीय सिसोदिया वंश में पूज्य श्री मिश्रीलालजी महाराज का शुभ जन्म हुआ। जिनत्व और वीरत्व के संस्कारों में रचे-बसे जनक-जननी से उक्त संस्कार आपको विरासत में मिले। आपकी जननी श्रीमती माणककंदर जी एक आदर्श श्राविका थी। देव, गुरु, धर्म के प्रति उनके हृदय में अनन्य आस्था थी। माता की यही अनन्य आस्था पुत्र मिश्रीलाल के जीवन का आत्मिक पाथेय बनी। मातृदूध के रूप में जिनत्व के संस्कारों का पान करते हुए आप बड़े हुए।

सामायिक और स्वाध्याय की सतत् आराधना से आपके हृदय में वैराग्य का दीप प्रज्ज्वलित हुआ। कैशोर्य की दहलीज पार करते-करते आपने स्तोक, प्रतिक्रमण एवं दशवैकालिक सूत्र को कण्ठस्थ कर लिया था। जैसे ज्ञान परिपक्व होता गया वैसे-वैसे वैराग्यभाव प्रबल से प्रबलतर होता चला गया। आखिर, पहले आपकी माता ने तथा उनके डेढ़ वर्ष आपने मुनि-दीक्षा अंगीकार की। आपकी माता श्रीमती माणककंवर ने आचार्य श्री सोहनलालजी महाराज के सान्निध्य में तथा पंजाब प्रवर्तिनी पार्वती ती जी महाराज की नेश्राय में वि.सं. 1962 पौष कृष्णा 2 को अमृतसर में आर्हती प्रव्रज्या में प्रवेश किया।

आपश्री ने अखण्ड यशस्वी पूज्य आचार्य श्री मन्नालालजी महाराज के श्रीचरणों में वि.सं. 1962 के चैत्रमास में अलवर नगर में दीक्षा-मंत्र अंगीकार कर प्रव्रज्या-पथ पर चरणन्यास किया। प्रस्तुत संदर्भ में पूज्य श्री मिश्रीलालजी महाराज की गुरु-परम्परा पर संक्षिप्त दृष्टिपात कर लेना अप्रासंगिक नहीं होगा।

पूज्य प्रवर श्री मिश्रीलालजी महाराज के आराध्य गुरुदेव आचार्य श्री पन्नालालजी महाराज महान् क्रियोद्धारक श्री हरजी ऋषिजी महाराज की परम्परा में पूज्य श्री हुक्मीचंदजी महाराज की सम्प्रदाय के एक यशस्वी आचार्य थे ।

उक्त महान् परम्परा में दीक्षित होकर मुनि श्री मिश्रीलालजी महाराज ने कुछ ही वर्षों में ज्ञान, ध्यान और साधना में परिपक्वता प्राप्त कर ली। ज्योतिष शास्त्र के आप प्रकाण्ड पण्डित बने। सेवा और तप में आपकी स्वाभाविक रूचि थी। आपके विनम्र सेवाभाव की आपके गुरुदेव मुखर चर्चाएँ किया करते थे। सरलता, मृदुता, शुचिता आदि श्रमण-धर्म के आप जीवन्त प्रतिमान थे। आपकी प्रवचन-प्रभावनाओं में मिश्री सा माधुर्या था।

आपका समग्र जीवन पवित्र सद्गुणों का संगम-स्थल था।

न्तु आपका जो सर्वाधिक ध्वनित सद्गुण था - वह था संघीय एकता की अपराभूत ललक और उस के लिए किए गए प्रयत्न। इस समन्वय की शुरूआत आपने श्रावक-समाज से की। साम्प्रदायिक प्रबलता के कारण उस युग में समाज भी खण्डित था। स्थान-स्थान पर संघर्षों का दौर चलता ही रहता था। आप जहाँ भी देखते, अपनी सूझ-बूझ से संघर्ष का शमन कर देते।

कई बार इसके लिए आपने कई-कई दिनों के उपवास भी किए। आपके उपवास से प्रेरित-प्रभावित होकर अनेकों क्षेत्रों में स्नेह और समन्वय के द्वार खुलते चलते गये। अपनी इन सफलताओं से प्रेरणा प्राप्त कर आपने भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों में विशृंखलित स्थानकवासी श्रमण-समाज पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। आपने अपनी ही परम्परा के एकीकरण के लिए भी कई बार उपवास किए।

वस्तुतः पूज्य श्री हुक्मीचंदजी महाराज की परम्परा भी उस समय दो सम्प्रदायों में विभक्त थी। समन्वय हेतु आपने स्वपक्ष और परपक्ष से कई बार सविनय अनुरोध किया। समन्वय हेतु श्रावकों को प्रेरित किया, परन्तु सफलता के सूत्र हस्तगत नहीं हो सके। तब आपने सत्याग्रह का पथ चुना। विभिन्न अवसरों पर जैन जगत् की एकता एवं सौहार्द के लिए आपने 12 बार छोटे-बड़े/सुदीर्घ अनशन किए, वि.सं. 1993, ई.सन् 1937 में आपका सबसे बड़ा अनशन 260 दिन तक लगातार चला। संघीय एकता और आत्म-शुद्धि हेतु किए गए आपके तप-विवरण को पढ़-सुनकर रोम-राशि कांप उठती है।

कोल्हापुर रोड़ दिल्ली में तपस्वीराज ने संलेखना स्वरूप तपस्या की। 27 दिनों तक साधारण रूप में तपस्या चली। तत्पश्चात् 28वें दिन पूज्यश्री ने संथारा अंगीकार कर लिया जो तृतीय दिन यानी संथारे के 30वें दिन सम्पन्न हुआ।

महामुनिवर के प्रलंब तपों का यह विवरण किसी कल्पना के आधार में नहीं दिया गया है, बल्कि श्रावकरत्न श्री फूलचंद जी जैन द्वारा लिखित/संकलित पुस्तक में पूर्णतः प्रामाणिक आंकड़ों के साथ यह पूर्ण विवरण उपलब्ध है।

महाप्राण मुनिवर को स्थानकवासी परंपराओं के समन्वय का सूत्रधार अथवा प्रबल प्रेरक कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। महामुनिवर के सत्याग्रहों का ही यह प्रभाव था कि सन् 1933 में अजमेर में महामुनि सम्मेलन हुआ जिसमें 32 सम्प्रदायों के पौने तीन सौ से अधिक साधु-साध्वियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में संघीय एकता का धरातल तो तैयार हुआ, परन्तु व्यवस्थित रूप से एकता स्थापित नहीं हो पायी।

व्यवस्थित एकता के लिए पूज्य महामुनिवर ने और अधिक जीवटता आंदोलन चलाया। वैचारिक आन्दोलन के रूप में आपने निम्नोक्त विचारों से समाज में जागृति उत्पन्न की। ❖❖

कण्मडलु में भूमण्डल का अर्थशास्त्र

बात उस समय की है जब प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह वित्तमंत्री थे। वे प्रमुख दिगंबर जैन मुनि सिद्धांत चक्रवर्ती, श्वेतपिच्छाचार्य, श्री विद्यानंद जी मुनिराज के दर्शन हेतु जैन शोध संस्थान, कुंद-कुंद भारती पधारे।

मुनि विद्यानंद जी की ज्ञानाराधना की तुलना नहीं की जा सकती। उन्होंने सभी धर्मों, दर्शनों का गूढ़ अध्ययन किया है। ज्ञानचर्चा के दौरान डॉक्टर मनमोहन सिंह आचार्य विद्यानंद जी के कमण्डलु को गौर से देख रहे थे।

यह भांप कर विद्यानंद जी बोले - 'आपको मालूम है देखो हमारे कमण्डलु में संपूर्ण भूमण्डल का अर्थशास्त्र छिपा है।' डॉक्टर मनमोहन सिंह ने मंद-मंद मुस्कान के साथ पूछा - 'कैसे?' मुनि श्री ने कमण्डलु उठाकर कहा - 'देखो इसका आने का द्वार बड़ा है, पर जाने का छोटा, उसी प्रकार संपूर्ण अर्थव्यवस्था तभी उन्नति कर सकती है जब उसके आय के द्वार बड़े हों और व्यय के द्वार छोटे। प्राचीन शास्त्रों में भी उल्लेख है - **आयव्ययमुखयोर्मुनिकमण्डलुरेव निदर्शनम्।** (आचार्य सोमदेवसूरि, नीतिवाक्यामृत 8/6)

अर्थात् आय और व्यय का सर्वोत्तम उदाहरण मुनि के कमण्डलु को समझना चाहिए।' वित्तमंत्री आचार्यश्री के अगाध ज्ञान पर आश्चर्यचकित हो गए। बोले - 'लगता है मैं तो अर्थशास्त्र का विद्यार्थी भर हूं, गुरु तो आप ही हैं।' ❖❖

सन्दर्भ : ज्ञानमुनिजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती ...

आगम का उजास व राजस्थानी मिठास बाँटने वाले संत : ज्ञानमुनिजी म.

- डॉ. दिलीप धींग, साहुकारपेट, चेन्नई (तमिलनाडु)

आचार्य श्री हस्ती के सुशिष्य, श्रमणसंघीय संतप्रवर प्रभावशाली प्रवचनकार ज्ञानमुनिजी के प्रवचन अन्य संतों के प्रवचनों से एकदम हटकर तथा रसप्रद होते हैं। वे श्रोताओं से जुड़े रहते हैं और श्रोतगण भी उनसे शुरू से अन्त तक जुड़े रहते हैं। उनकी व्याख्यान-शैली की अनेक विशेषताएँ हैं। जो विशेषता रेखांकनीय है, वह है सन्दर्भ सहित प्रस्तुति। सन्दर्भ चाहे व्यक्ति का हो या शास्त्र का, मुनिश्री पूर्ण निष्पक्ष भाव से सन्दर्भ देते हुए प्रवचन करते हैं। कितने ही संत अपनी संप्रदाय के संतों का संदर्भ तो दे देते हैं, लेकिन दूसरी संप्रदाय के संतों, विद्वानों का नाम नहीं लेते हैं। लेकिन ज्ञानमुनि की बात अलग है।

इसके अलावा मुनिश्री अपने व्याख्यान में लोक-जीवन में रचे-बसे किस्सों, दोहों, मुहावरों, कहावतों आदि का समयोचित उपयोग करने में बहुत कुशल हैं। उन्हें राजस्थानी भाषा की अनेक कहानियाँ और कहावतें मुख-जबानी याद है, जिनका वे अपने व्याख्यानों में प्रभावी उपयोग करते हैं। उनकी हिंदी में भी राजस्थानी पुट रहता है। उनके व्याख्यानों में राजस्थानी भाषा की छटाएं होने से वे दक्षिण भारत में प्रवासी राजस्थानियों के बीच बेहद लोकप्रिय व श्रद्धास्पद हैं। उनके गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज उन्हें 'रोचक व्याख्यानी' कहा करते थे।

राजस्थानी के अलावा हिन्दी, प्राकृत और संस्कृत भाषाओं के जानकार मुनिश्री के प्रवचनों में अनेक इन्द्रधनुषी रंग होते हैं। इन रंगों में वे धर्म, दर्शन, सिद्धान्त, संस्कृति और इतिहास के कई पन्ने खोलते हैं। आज जहाँ नई पीढ़ी हमारी श्रेष्ठ परम्पराओं तथा पारम्परिक शब्दावली और संस्कारों से दूर होती जा रही है, वहाँ ज्ञानमुनि के प्रवचन इस गौरवशाली विरासत को बचाने का भागीरथ प्रयास है।

बड़े-बड़े महात्मा जिसे छोड़ नहीं पाते हैं, उस दर्षष्टि-राग अथवा व्यक्ति-मोह का उनमें अभाव है। इसीलिए, वे अपने प्रवचनों में किसी भी सम्प्रदाय के किसी भी विशिष्ट सन्त या गृहस्थ के सद्गुण या प्रेरक प्रसंग का अहोभाव से उल्लेख करते हैं। जैन समाज की स्थानकवासी परंपरा के अनेक संतों और श्रावकों के संस्मरण उन्हें तिथि और वर्ष के साथ याद हैं तथा वे उनका उनके प्रवचनों में उल्लेख करते हैं। गुणानुरागिता और मिलनसारिता उनकी बहुत बड़ी विशेषताएं हैं। इन विशेषता के कारण उन्होंने समाज में एकता, समता और समरसता का वातावरण बनाने की कोशिश की है। साधारण प्रतीत होने वाली छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से वे व्यक्ति को शास्त्र के नजदीक ले जाने और जीवन की गंभीर शिक्षाएँ देने में दक्ष हैं।

साधर्मी वात्सल्य, कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन, जीवदया, प्राणिरक्षा आदि विषयों पर उनकी प्रेरणाओं का अनेक कार्य हुए और हो रहे हैं। उनकी प्रेरणा से उदारमना दयालु श्रावकों ने बूचड़खानों में जाने वाली सैकड़ों गायों की रक्षा की है। उनकी उपदेशों से प्रेरित होकर श्रावकगण राजस्थान में चलने वाली बकराशालाओं में प्रतिवर्ष लाखों रुपयों की राशि भिजवाते हैं।

उनके द्वारा संकलित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; जिनमें ज्ञानांजलि (7 संस्करण), जिनशासन की दिव्य विभूतियाँ (भाग 1-2), ज्ञान सूक्ति कोष (भाग 1-2), ज्ञान रश्मियाँ (भाग 1-4), दिवाकर देन आदि प्रमुख हैं। ज्ञान रश्मियाँ और दिवाकर देन पुस्तकों में उन्होंने लगभग डेढ़ हजार लोक-कथाओं, धर्म-कथाओं, नीति-कथाओं और प्रेरक प्रसंगों को सहेजा और सुरक्षित किया है।

आचार्य श्री आनंदऋषिजी, आचार्य श्री हस्तीमलजी, मरुधर-केसरी मुनि श्री मिश्रीमलजी, युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी 'मधुकर', उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी, उपाध्याय श्री केवलमुनिजी, प्रवर्तक श्री अंबालालजी महाराज आदि अनेक महान संतों और अनेक सेवाभावी श्रावकों के प्रेरक जीवन-प्रसंगों को आपने लिपिबद्ध किया है। इतिहास के अनेक तथ्य इन प्रसंगों में समाविष्ट हैं।

गुणग्राही ज्ञानमुनिजी ने जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज के प्रवचन साहित्य में से लगभग दो सौ प्रेरक प्रसंगों और कथाओं का संकलन किया। इन पंक्तियों के लेखक (डॉ. दिलीप धींग) के संपादन में 2016 में यह संकलन 'दिवाकर देन' के नाम से प्रकाशित हुआ। जैन दिवाकर जी के देवलोकगमन के 66 साल बाद पहली बार हुआ यह कार्य अभिनंदनीय है। ज्ञानमुनिजी ने अपने प्रवचनों में जैन दिवाकर जी के कुछ गीतों पर भी बड़े ही प्रेरणादायी व्याख्यान दिये हैं। ऐसे रचनात्मक और जोड़ने वाले प्रयत्न बहुत कम देखने को मिलते हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल 12, वि.सं. 2005 (13 दिसम्बर 1948) को जोधपुर (राजस्थान) में जन्मे ज्ञानमुनिजी के वीरपिता गुलराज अबानी तथा वीरमाता रतनकँवर अबानी धर्मनिष्ठ श्रावक-श्राविका थे। उन्होंने कला-स्नातक (प्रथम वर्ष) के अलावा जैन सिद्धान्त प्रभाकर और जैन सिद्धान्त कोविद की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। वैशाख शुक्ल 14, वि.सं. 2032 को उन्होंने आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के चरणों में जैन मुनि दीक्षा अंगीकार कर ली। रत्नवंशीय आत्मार्थी संत चौथमलजी उनके शिक्षागुरु रहे। ज्ञानमुनिजी के साथ ही दीक्षा लेने वाले श्री महेन्द्रमुनिजी संप्रति रत्नसंघ के भावी आचार्य हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र (25/32) में कहा गया है कि **'णाणेण य मुणी होइ'** अर्थात् ज्ञान से मुनित्व की साधना फलवती बनती है। ज्ञानमुनि अपने नाम के 'ज्ञान' और 'मुनि' दोनों शब्दों की गरिमा के प्रति सजग रहते हैं। वे स्वयं ज्ञानोपासना में लगे रहते हैं और ज्ञान तथा ज्ञान की उपासना करने वालों को पूरा सम्मान देते हैं। उनका कहना है कि समाज को आडंबर, प्रदर्शन व फिजूलखर्ची रोककर श्रुतज्ञान के विकास, विद्वानों के निर्माण और विद्वानों के प्रोत्साहन की ओर ध्यान देना चाहिये।

अनेकान्त के जीवन्त प्रतिमान ज्ञानमुनि ने राजस्थान के अलावा कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना तथा अन्य क्षेत्रों में विचरण किया है। वे सभी जगहों पर शाकाहार, सदाचार, व्यसनमुक्ति, धर्म-ध्यान और त्याग-तप की अलख जगाते हैं। 22 मई, 2024 को उन्होंने अपनी दीक्षा के 50वें वर्ष में प्रवेश किया है। उनकी संयम स्वर्ण जयंती समाज में संयममय जीवन जीने की प्रेरणा देने वाली बने। संप्रति हैदराबाद में विराजित वरिष्ठ श्रमणवर श्री ज्ञानमुनि युग-युग जियें और सबको धर्मलाभ प्रदान करते रहें। ❖❖

चातुर्मास पर्व - आत्मकल्याण का महायज्ञ

- सौ. शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला जैन, निगड़ी (महाराष्ट्र)

नये के प्रति हर मनुष्य में सहज ही उल्लास होता है। नई तरंगे, नई थिरकन, नई उमंग होती हैं। ऐसा ही आज का चातुर्मास पर्व हमारे जीवन में नवदीप जलाने के लिए, नये संकल्पों को प्रबल बनाने के लिए स्वर्णिम प्रभात की अगवानी लेकर अज्ञानावरण को हटाकर ज्ञान प्रदीप करने आया है।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है, चातुर्मास का समय वीतराग वाणी का स्वर्णिम संयोग लेकर आया है, आप इस संयोग का लाभ उठाएँ, बीते समय को अब सुधार लें। अपने आपको धर्म क्रियाओं में, शुभचिन्तन में लगा लें। हमें चातुर्मास के पावन काल में धर्म ध्यान की झडी लगाकर आश्रवद्वारों को बंद करके संवर में समय बिताना है। नित्य जिनवाणी सुनकर उसे हमें अपने जीवन में उतारना है।

जीवन में सात्विकता लाने का प्रयास करना है। नशे से दूर रहना है। मनुष्य जन्म अनमोल है, जीवन क्षण भंगुर है। खुद के शिष्यकार खुद बने। उत्तरी के निर्णय के भरोसे चलने वाला जीवन व्यर्थ है। समाज के प्रति हमारे दायित्व का एहसास हर वक्त होना आवश्यक है। इस चातुर्मास में हम आत्मावलोकन करें। इससे पूर्व मैंने क्या पाया है ? क्या खोया है? क्या खोया हुआ मैं वापस प्राप्त कर सकता हूँ। असंभव कुछ भी नहीं है। शक्तियाँ हमारे भीतर ही मौजूद है, उन्हें हम प्रकट और जागृत करने की आवश्यकता है।

इस पर्वकाल में आत्मशोधन करके अपने प्रकृति स्वभाव में परिवर्तन लायेंगे और दुर्गुनों का नाश करके सद्गुणों का बीजारोपण करेंगे। व्यसनमुक्त संस्कारयुक्त जीवन के साथ हर वर्ग को जोडते हुए धर्म के सही मर्म को समझाते हुए स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या, की ज्योति जलायेंगे, तभी चातुर्मास का यह सुनहरा समय सार्थक होगा। तभी परम पद प्राप्ति की मंजिल की ओर अग्रसर हम हो पायेंगे। ❖❖

दरियादिली

- श्री संजीव जैन, करनाल (हरियाणा)

हरियाणा के एक प्रमुख जिले में रामदेव शैलरों (राइस मिल) में चावल भराई व सिलाई की ठेकेदारी का काम करता था। उस शहर के लगभग 40 शैलरों में से 25-26 शैलरों में वह ही ठेकेदारी का काम करता था। उसके नीचे 250-300 मजदूर हर वक्त काम करते थे। बिहार के समस्तीपुर जिले से आकर अब वह यहीं बस गया था। उसके बच्चे यहीं पैदा हुए और पले-बढ़े थे। बिहार से अगर कोई आदमी उस शहर में आता और उसे कोई काम नहीं मिलता तो वह सीधा रामदेव के पास पहुँच जाता था। रामदेव भी उनसे अपने भाईयों की तरह पेश आता था। वह उनके खाने-पीने व रहने का बंदोबस्त बखूबी कर देता था। वह उन्हें काम दिलाने में भी मदद करता था। अपनी इसी नेक-नियत की वजह से वह बिहारियों में बहुत प्रसिद्ध था। उनके समुदाय का कोई भी आयोजन उसकी उपस्थिति के बिना अधूरा रहता था।

एक तरह से वह अपने बिहारी समुदाय का अनिर्वाचित व अनिर्णीत प्रधान ही था, जिसकी बात काटने की कोई कोशिश तो क्या सोच भी नहीं सकता था। वह भी सबको साथ लेकर चलने में यकीन रखता था। महीने में एक बार वह भंडारा लगाता था, जिसमें वह अपने सभी बिहारी भाइयों व अन्य लोगों को बुला लेता था। अपनी कालोनी में उसने एक मंदिर भी बनवा रखा था। वह चार-पाँच लोगों के साथ मिलकर शाम को गरीब बच्चों को पढ़ाने वाली एक संस्था भी चलाता था, जिसमें तकरीबन सारा खर्चा उसी का होता था। अपनी संस्था की कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों को वह अपने बच्चों की तरह समझता था। वह उनकी छोटी-बड़ी जरूरतों का भी ख्याल रखता था। समय-समय पर वह उनके लिए उपहार भी ले जाता था और उनके लिए कई प्रकार के कार्यक्रम भी आयोजित करता रहता था। कई बार वह उन्हें बाहर घुमाने भी ले जाया करता था।

रामदेव की शख्शियत के विभिन्न पहलुओं को देखने, जानने और समझने के बाद हम कुल मिलाकर कह सकते हैं कि वह जितना समाज से ले रहा था, उससे ज्यादा समाज को वापिस देने की कोशिश भी कर रहा था।

एक बार उसके शहर में एक पुस्तकों का मेला लगा। रामदेव ने जब उस पुस्तक मेले के बैनर शहर में लगे देखे तो एकदम उसके दिमाग में विचार आया कि इस मेले में अपनी संस्था की कक्षा के बच्चों को लेकर जाना चाहिए। एक दिन उसने एक बैन और मिनी बस में 30-50 बच्चों को पुस्तक मेले में ले जाने का कार्यक्रम बनाया। उसने अपनी यह योजना संस्था के अन्य साथियों को बताई तो सभी बहुत खुश हुए। जिस दिन बच्चों को मेले में लेकर जाना था, उस दिन रामदेव को कुछ काम पड़ गया। उसने अपने साथियों को कहा कि वे बच्चों को लेकर पुस्तक मेले में पहुंचे, वह सीधा वहीं पर आ जाएगा। सभी बच्चों को निर्धारित समय पर मेले में पहुँचा दिया गया। लेट हो जाने के कारण रामदेव धूल-मिट्टी से सने अपने कपड़ों को हल्का-सा झाड़कर पुस्तक मेले में पहुँच गया। बाहर मेले में जाने वालों की एक लम्बी लाइन लगी हुई थी। वह भी लाइन में खड़ा होकर अंदर जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

तभी रामदेव के पीछे खड़ा एक आदमी, जो शक्ल से यहीं का लगता था, उसे बोला-क्यों रे बिहारी ! तू यहाँ लाइन में क्या कर रहा है? तू क्या यहाँ अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाने आया है? तुझे पढ़ना आता भी है या नहीं? अगर पढ़ना आता भी होगा तो किताबें पढ़कर कौन-सा कलेक्टर बन जाएगा?

एक बार तो उस अनजान आदमी की ऐसी बेतुकी बातें सुनकर रामदेव को गुस्सा आ गया मगर वह उसे कुछ नहीं बोला। वह आदमी जिसे उसका साथी काला कहकर पुकार रहा था और भी बहुत कुछ बोलता रहा। रामदेव ने उसकी बातों की ओर कोई खास तवज्जो नहीं दी, वह शीघ्र ही अपनी बारी आने पर मेले में दाखिल हो गया। बच्चों को उनकी पसंद व जरूरत की किताबें दिलवाकर वह उन्हें अपने साथ ही वापिस ले आया। रास्ते में उसने सभी बच्चों को आइसक्रीम भी खिलाई। बच्चों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और रामदेव भी उन्हें खुश देखकर बहुत खुश था। बात आई-गई हो गई, रामदेव लाइन में खड़े आदमी की बात

को तो भूल गया। मगर उस आदमी की छनकती-सी तेज आवाज एक अलग ही तरह की थी, वह रामदेव की यादों में तथा दिमाग के किसी कोष्ठक में जमा हो गई थी।

अंदाजन दो महीने के बाद वह आटा, तेल, दाल व मसाले आदि लेने के लिए किराने की थोक की दुकान पर गया। जिस समय वह सामान ले रहा था, उस समय दुकान पर माल की गाड़ी भी उतर रही थी। रामदेव के कानों में माल उतारने वाले पल्लेदारों के शब्द भी पड़ रहे थे। लेबर का जो मजदूर दूसरे मजदूरों को गाड़ी में से बोरियाँ उठवा रहा था, वह बोला-ओ काले! तू वहां बैठा अब बीड़ी ही पीता रहेगा या काम भी करेगा।

काला बोला-आ तो रहा हूँ, बीड़ी ही तो पी रहा था। तुम भी यार मोल लेने को तैयार रहते हो. चल उठवा बोरी।

ये शब्द सुनते ही रामदेव के कान एकदम खड़े हो गए। यह छनकती-सी तेज आवाज उसी आदमी की थी जिसने उस दिन पुस्तक मेले की लाइन में खड़े हुए उसे बहुत कुछ उल्टा सीधा कहा था। उसने काले को इशारे से अपने पास बुलाया और उसे कहने लगा क्यों भाई ! उस दिन पुस्तक मेले की लाइन में खड़े हुए तुम बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे कि पुस्तकें पढ़कर क्या कलेक्टर बन जाऊँगा। तुम अपने आपको तो देखो कि तुम क्या करते हो? तुम खुद तो मजदूरी करते हो और बिना मुझे जाने-पहचाने, तुमने उस दिन मुझे लम्बा-चौडा भाषण दे दिया था। तुम मुश्किल से मजदूरी करके 10 से 12 हजार रुपये हर महीने कमा पाते होंगे। क्या तुम्हे मालूम है कि तुम जैसे 250-300 आदमी हरदम मेरे नीचे काम करते हैं। मैं हर महीने 3 से 4 लाख रुपये कमाता हूँ। मैं तुम्हें नीचा दिखाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। बस तुम्हें समझा रहा हूँ कि बिना जाने-पहचाने किसी को भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। उस दिन मैं अपनी संस्था, जो गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ाती है, की कक्षा के बच्चों को किताबें दिलवाने वहाँ गया था। मैं उन्हें 25000/- रुपये के आस-पास की किताबें दिलवाकर लाया था। तुम्हें बिना जाने मुझे इतना भला-बुरा नहीं कहना चाहिए था। आइन्दा किसी भी आदमी को इस तरह से नीचा मत दिखाना। तुम्हारे गलत बर्ताव व बिना वजह ही किसी की बेइज्जती करने से सामने वाले पर क्या बीतती होगी, तुम्हें इस बात का थोड़ा-सा भी अंदाजा है या नहीं।

भाई साहब ! उस दिन मुझसे गल्ती हो गई। मुझे इस तरह से आपको उल्टा सीधा नहीं कहना चाहिए था। आप मेहरबानी करके मुझे माफ कर दीजिए।

कोई बात नहीं, आइन्दा तुम ध्यान रखना कि जाने-अनजाने में किसी के साथ भी ऐसा व्यवहार मत करना। हाँ, अगर तुम्हें किसी भी समय मेरी जरूरत हो तो मेरा मोबाइल नम्बर नोट कर लो, बेहिचक मुझे याद कर लेना। तुम्हारे किसी भी काम आकर मुझे दिली खुशी होगी।

काला उस आदमी की दरियादिली देखकर हैरान था और वह उसके प्रति आदर, सम्मान व श्रद्धा के भावों में भर गया था। ❖❖

स्वावलम्बी

बंगाल के एक छोटे से स्टेशन पर एक गाड़ी आकर खड़ी हुई। एक सूट-बूटधारी युवक गाड़ी से उतरा और कुली!कुली पुकारना शुरू किया, हालांकि सामान उसके पास कुछ ज्यादा नहीं था। कुली तो नहीं मिला, मगर एक अधेड़ उम्र का आदमी, मामूली देहातियों के से कपड़े पहने उसेके पास आ गया। युवक ने उसे कुली समझ लिया और बोला - 'तुम लोग बड़े सुस्त होते हो। ले चलो इसे जल्दी।' उस आदमी ने वह सामान रखवाकर मजदूरी देने लगा। वह आदमी बोला - 'धन्यवाद! इसकी जरूरत नहीं है।'

'क्यों? युवक ने ताज्जुब से पूछा।' उसी वक्त युवक के बड़े भाई घर में से निकले और उन्होंने उस आदमी को प्रणाम किया। जब युवक को मालूम हुआ कि जिनसे वह सामान उठवाकर लाया है वे बंगाल के प्रतिष्ठित विद्वान श्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी हैं, तो वह उनके पैरों पर गिर पड़ा। विद्यासागर बोले - 'मेरे देशवासी फिजूल का अभिमान छोड़कर यह समझें कि अपना काम अपने हाथों करना कितने गौरव की बात है और स्वावलम्बी बनें, यही मेरी असली मजदूरी होगी।' ❖❖

24 तीर्थंकर कल्याणक, जप-तप कैलेण्डर

आर्शीवचन युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

प्रस्तुति - श्री रतनचंद पोकरना जैन, चेन्नई (तमिलनाडु), 98417 50338

वि.सं. 2081 चैत्र सुदी 1, दि. 9.4.2024 से दि. 29.3.2025 तक का कल्याणक कैलेण्डर है।

नव वर्ष चैत्र सुदी-1 में विद्या, विनय और विनम्रता की त्रिवेणी संग श्रद्धा समता और साधना के शिखर पुरुष प्रभु महावीर के पावन उत्तराधिकारी अनंतलब्धि निधान, गणधर श्री गौतमस्वामीजी (इन्द्रभूतिजी) के जन्म दिवस (अवतरण दिवस) पर भाव भीनी वंदना।

यह कैलेण्डर कल्याणक आराधना के लिए है। इसको अपने सामायिक के उपकरणों के साथ, आराधना-स्थल पर एवं सामायिक की किताबों के साथ रखें।

इस कैलेण्डर की विशेष बात है कि तिथि कब समाप्त होती है, उसका उल्लेख कब शुरू होती है तथा सूर्य-उदय के समय कौनसी तिथि थी उसका उल्लेख किया गया है।

कभी-कभी सवेरे 8 बजे, 9 बजे तिथि समाप्त हो जाती है। तब तिथि कब शुरू होती है उसका ध्यान रखें। जप तप में तथा अन्य मुहूर्त में उसका महत्व बहुत है। तथा उत्तम लाभ मिल सकता है। तिथि वद, घट, क्षय तिथि (कल्याणक में) Time के साथ होने से जप-तप आराधना कब करनी है उसका भी ध्यान रहेगा।

कल्याणक तिथि (Time के साथ) बिना पूछे मुहूर्त है।

तिथि क्षय के एक दिन पहले जप-तप आराधना कर लेवें। इस तिथि क्षय में सावधानी रखें।

कोई त्रुटि हो तो, सूचित करावें।

जिन आज्ञा के विरूद्ध कुछ भी लिखा हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

वैदिक परम्परा में भी कई तिथियाँ अपने कल्याणक तिथि में आती है, जैसे - राम नवमी, रक्षा बंधन, नाग पंचमी, शीतला सप्तमी, कृष्ण जन्माष्टमी, मालय अमावस्या (पितृ श्राद्ध), दीपावली, महाशिवरात्रि, होलकाष्टक प्रारंभ । शीतला अष्टमी, यह सब लौकिक पर्व वैदिक पर्व भी कल्याणक के दिन है । ये सभी तिथि के अनुसार ही आते हैं। fix दिनांक के अनुसार नहीं ।

इस कैलेण्डर को अपने Near and Dear को खुद Xerox करवा कर बाँटें।

धर्म-आराधना में खुद सहयोगी बनें।

कल्याणक के दिन जो 20 या 21 माला फेरनी है (जिन तीर्थंकर कल्याणक का कल्याणक हो, उसके अनुसार) जब भी जितनी माला फेरी हो, उस दिन पेपर पर टिक करें ताकि माला कुछ बाकी रह गई हो तो कुछ समय बाद फेर लेवें।

लक्ष्य तिथि समाप्ति के पहले Part by Part भी Ok परंतु मालाएं पूरी फेरनी है।

यदि कोई भूल-चूक हुई तो नोट करें, गुरु भगवन्तों से प्रायश्चित्त लें, खुद भी प्रायश्चित्त ले सकते हैं। बस सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र की तरफ आगे बढ़ें।

अनंत करूणा निधान तीर्थंकर परमात्माओं का प्रत्येक कल्याणक का दिन श्रेष्ठतम दिन है क्योंकि, उस दिन कुछ 'समय' के लिए समस्त जीव राशि को आनन्द की अनुभूति होती है, तीनों लोक में ।

जिसको अपने के Ideal रूप में तीर्थंकर परमात्मा मान्य होते हैं, वे ही तीर्थंकर प्रभु के प्रत्येक कल्याणक की आराधना करते हैं, अंत में अनंत पुण्य और श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त करते हैं।

बहुत से साधक-आराधक जप करते हैं तो तप की अपेक्षा करते हैं, तप करते हैं तो जप की अपेक्षा करते हैं। जिससे फल में बहुत बड़ा अंतर पड़ जाता है।

श्रीपाल चारित्र में कहा है कि मयना/मैना सुन्दरी आयंबिल की आराधना के साथ अरिहंत आदि का ध्यान भी करती थी।

एक साथ (श्रावक) जप नहीं करते सकते तो Part by Part पूरी तिथि के दौरान 20 या 21 माला का जाप करने का लक्ष्य रखें।

तप में आयंबिल या एकासन या उपवास नहीं कर पा रहे हैं तो (श्रावक जी) कम से कम रात खाना नहीं (रात की

सौगंध, चौविहार या तिविहार पाले) और यह भी नहीं कर सकते हैं तो स्वेच्छा से 12 प्रकार के तप से कोई संकल्प करके आगे बढ़े।

लक्ष्य यह रखे, जैसे शास्त्रों में बताया गया, ब्रह्मचर्य, जप और तप की उत्तम श्रेणी में जाना है।

शुरूआत में ऊपर बताया गया अपवाद मार्ग समझे और आगे बढ़े...।

जप और तप के साथ दान दें, असहाय तथा गरीबों की सहायता करें, उस दिन अगर वैसा नहीं कर पायें तो उस दिन घर में रखी हुंडी में कुछ न कुछ सहयोग अवश्यमेव डाल देवें तथा बाद में कभी भी शुभ काम में खर्च कर देवें।

साधु संतों को भी उनके अनुष्ठान में यह कैलेण्डर सहायक होगा।

मुख्य रूप से श्रावकों के लिए यह बनाया गया कैलेण्डर है।

1. कल्याणक तिथियों की आराधना का महत्व

कल्याणक तिथियों की आराधना की विशेषता है कि जिस दिन जो-जो कल्याणक अवसर्पिणी काल में होते हैं, उस दिन ही सभी उत्सर्पिणी काल के उसी अनागत तीर्थंकरों के वे कल्याणक होंगे, लेकिन विपरीत रूप से तीर्थंकरों के कल्याणक होंगे।

जैसे कि अवसर्पिणी काल में वर्तमान 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का

च्यवन कल्याणक - आषाढ सुद 6

जन्म कल्याणक - चैत्र सुद 13

दीक्षा कल्याणक - मिगसर वद 10

केवलज्ञान कल्याणक - वैशाख सुद 10

निर्वाण कल्याणक - कार्तिक वद अमावस्या (30)

के दिन हुए उसमें विपरीत क्रम से उत्सर्पिणी के च्यवन आदि कल्याणक आषाढ़ सुद 6 आदि को होंगे।

अर्थात् कल्याणक तिथियाँ प्रायः शाश्वत ही है।

इससे यह रहस्य उजागर होता है यद्यपि उस वर्तमान तीर्थंकर भगवान की च्यवन कल्याणक की आराधना करते हैं परन्तु उस दिन अनंत भूत, भविष्य और वर्तमान तीर्थंकरों के कल्याणक होते हैं, हुए हैं एवं होने वाले हैं।

अतः इसके अनुसार, आधार से आप सभी आराधना करके परम्परा से शीघ्र मोक्ष प्राप्त करें। एक कल्याणक की आराधना अनन्त-अनन्त कल्याणकों की आराधना का फल मिलता है।

परमात्मा का ध्यान करने से सम्यग् दर्शन निर्मल होने से, मिथ्यात्व तथा नीच गौत्र कर्मों का क्षय होता है।

परमात्मा का ध्यान करने से सम्यग् ज्ञान बढ़ता है। मोह का रस कम होता है। कर्म क्षय करते-करते मार्ग का अनुसरण करने से भव स्थिति का परिपाक होता है। अर्थात् धीरे-धीरे संसार परित होता जाता है

प्रभु का ऐसा ध्यान करने से चारित्र मोहनीय कर्म का नाश होता है। संयम के विघ्न दूर होते हैं, शुद्ध चारित्र पालने का वीर्य/पुरूषार्थ प्रकट होता है।

प्रभु के चक्षुओं द्वारा केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी का पान करने से अपने-अपने अज्ञान तिमिर का नाश, ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होता है।

निर्वाण कल्याणक के दिन प्रभु ने अंत में सभी आठों कर्मों का क्षय किया। अव्याबाध सुख की प्राप्ति हुई। अक्षय स्थिति, सिद्ध पद के गुणों का प्रकटीकरण हुआ एवं अनंत सिद्ध आत्माओं के साथ संयोग हुआ - ऐसे परमात्मा का ध्यान करना है।

निरंतर तीर्थंकर के जाप करने से, जप-तप अनुष्ठान से, वचन शुद्धि होती है। वचन-शुद्धि के बाद, वचन-सिद्धि भी प्राप्त हो सकती है।

प्रभु कृपा द्वारा... कृपा पात्र बनना है।

तिथि के सम्बंध में अन्य विवरण

यह तिथि कैलेण्डर Moon Calender पर आधारित है शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष

अंग्रेजी तारीख - Sun Calender पर आधारित है।

हमारी पृथ्वी 'चन्द्र' से बहुत नजदीक है, अन्य ग्रह के मुकाबले, इसलिए चन्द्र का पृथ्वी पर विशेष प्रभाव पड़ता है। अपने जैन सूत्रों में बताया गया है

2 (द्वितीया), 5 (पंचमी), 8 (अष्टमी), 11 (एकादशी), 14 (चतुर्दशी), 30 (अमावस्या), 15 (पूर्णिमा) का विशेष महत्व है।

ये दिन शुभ क्रिया में, जैसे- सत्संग, सेवा, दान, तप में ही व्यतीत होने चाहिए।

जैन परम्परा में इसके अतिरिक्त यह भी बताया गया है कि उन तिथियों में मनुष्य अगले आयुष्य का बंध करता है। इन तिथियों के दिनों में होता है।

तीव्र शुभ भाव - आयुष्य शुभ

तीव्र अशुभ भाव - अशुभ परिणाम होगा

इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा शुभ भाव में व्यतीत करने है।

शुरूआत में परिवार के सभी सदस्य 3-4-5 माला जाप करें, कल्याणक के दिनों में।

कुल मिलाकर शुरूआत करें Positive से। ऐसा भी लक्ष्य.... शुरूआत में कर सकते हैं, Flexible बनें।

सबको जुड़ना है, धर्म-ध्यान से जुड़ें।

इससे सकल संघ में, तीर्थंकर प्रभु के कल्याणक तिथियों के प्रति जागृति सर्व श्रद्धा भाव बढ़ेंगे।

¬ **नमो लोए सव्व साहूणं** । यह सिर्फ संकेत के लिए है...

वर्तमान आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. और आचार्य श्री रत्नसुन्दर सूरीश्वरजी म.सा. का जन्म कल्याणक के दिनों में ही जन्म हुआ है तथा वर्तमान और भूत के कई जाने-माने आचार्य तथा संतों का जन्म कल्याणक के दिनों में ही हुआ तथा इन्होंने आध्यात्मिक जगत् में चार चाँद लगाये हैं।

ऐसे ही भव्य आत्मा का जन्म आपके घर में हुआ है तो चेक करें तथा Time तिथि के साथ अर्थात् तिथि की शुरूआत से तिथि समाप्ति काल में Check करें। **जो संसार के काम में और अध्यात्म के क्षेत्र में भी चार चाँद लगा सकते हैं।**

(Normal) जन्म होना चाहिए (Operation) से नहीं इस पर काफी शौध Research चल रहा है।

वह सिर्फ श्रद्धा कल्याणक तिथि पर श्रद्धा के लिए है।

आपने यह गौर किया होगा मंदिरों की प्रतिष्ठा, तप, दीक्षा, स्थानक 95 प्रतिशत इन्हीं कल्याणक दिनों में सम्पन्न होते हैं। अन्य आध्यात्मिक कार्य में भी इन तिथियों का उपयोग बड़ी श्रद्धा से किया जाता है।

श्रावक लोग अपनी व्यस्तता के कारण समय पर जप नहीं कर पा रहे हैं तो माला अपने दुकान में गल्ला पेटी या अन्य शुभ जगह में रखकर जब भी समय मिले जप करने का, उस दिन का लक्ष्य रखें। शुरूआत करेंपरिणाम अच्छे मिलेंगे।

¬ श्री असिआउसाय नमः

वि.सं. 2081 चैत्र सुदी 1, अप्रैल 2024 से 29.03.25 तक

Date :	वार -	सूर्योदय तिथि	तीर्थंकर नाम जप -	कल्याणक -	तिथि शुरूआत और तिथि समाप्ति काल
11-4-24	गुरूवार	चैत्र सुदि 2	¬ श्रीं कुन्थुनाथजी सर्वज्ञाय नमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 10-4-24 Time 17-43 से तिथि अंत 11-4-24 Time 15-4 तक
13-4-24	शनिवार	चैत्र सुदि 5	¬ श्रीं अनन्तनाथाय पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 12-4-24 Time 13-13 मिनट से तिथि अंत 13-4-24 Time 12-5 तक दोपहर
13-4-24	शनिवार	चैत्र सुदि 5	¬ श्रीं अजिनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 12-4-24 Time 13-13 मिनट से

					तिथि अंत 13-4-24 Time 12-5 तक दोपहर
13-4-24	शनिवार	चैत्र सुदि 5	¬ श्रीं संभवनाथजी पारंगताय नमः	मोक्ष	तिथि शुरू 12-4-24 Time 13-13 मिनट से तिथि अंत 13-4-24 Time 12-5 तक दोपहर
17-4-24	बुधवार	चैत्र सुदि 9	¬ श्रीं सुमतिनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 16-4-24 Time 13-26 मिनट दोपहर तिथि अंत 17-4-24 Time 15-15 तक दोपहर
19-4-24	शुक्रवार	चैत्र सुदि 11	¬ श्रीं सुमतिनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 18-4-24 Time 17-33 मिनट दोपहर तिथि अंत 19-4-24 Time 20-05 तक
21-4-24	रविवार	चैत्र सुदि 13	¬ श्रीं महावीरस्वामीजी अर्हते नमः	जन्म	तिथि शुरू 20-4-24 Time 22-43 मिनट दोपहर तिथि अंत 21-4-24 Time 25-12 मिनट तक
23-4-24	मंगलवार	चैत्र सुदि 15	¬ श्रीं पद्मप्रभुजी सर्वज्ञयायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 22-4-24 Time 27-26 मिनट दोपहर तिथि अंत 23-4-24 Time 29-19 मिनट तक
24-4-24	बुधवार	वैशाख वदी 1	¬ श्रीं कुंथुनाथजी पारंगतायनमः वृद्धि तिथि	मोक्ष	तिथि शुरू 23-4-24 Time 29-20 मिनट तक तिथि अंत 25-4-24 Time 6-46 मिनट तक
26-4-24	शुक्रवार	वैशाख वदी 2	¬ श्रीं शीतलनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 25-4-24 Time 6-47 मिनट दोपहर तिथि अंत 26-4-24 Time 7-47 मिनट तक
29-4-24	सोमवार	वैशाख वदी 5	¬ श्रीं कुंथुनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 28-4-24 Time 8-23 मिनट दोपहर तिथि अंत 29-4-24

					Time 7-38 मिनट तक
30-4-24	मंगलवार	वैशाख वदी 6	¬ श्रीं शीतलनाथजी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 29-4-24 Time 7-59 मिनट तिथि अंत 30-4-24 Time 7-06 मिनट सुबह तक
3-5-24	शुक्रवार	वैशाख वदी 10	¬ श्रीं नमि(नेमि)नाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 2-5-24 Time 25-55 मिनट रात से तिथि अंत 3-5-24 Time 23-25 मिनट तक
6-5-24	सोमवार	वैशाख वदी 13	¬ श्रीं अनंतनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 5-5-24 Time 17-43 से तिथि अंत 6-5-24 Time 14-41 मिनट तक
7-5-24	मंगलवार	वैशाख वदी 14	¬ श्रीं अनंतनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 5-5-24 Time 14-42 से तिथि अंत 6-5-24 Time 11-41 मिनट तक
7-5-24	मंगलवार	वैशाख वदी 14	¬ श्रीं अनंतनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 5-5-24 Time 14-42 से तिथि अंत 6-5-24 Time 11-41 मिनट तक
6-5-24	मंगलवार	वैशाख वदी 14	¬ श्रीं कुंथुनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 6-5-24 Time 14-42 से तिथि अंत 7-5-24 Time 11-41 मिनट तक
11-5-24	शनिवार	वैशाख वदी 4	¬ श्रीं अभिनंदनजी परमेष्ठीनमः	च्यवन	तिथि शुरू 10-5-24 Time 26-52 से तिथि अंत 11-5-24 Time 26-05 मिनट तक
14-5-24	मंगलवार	वैशाख वदी 7	¬ श्रीं धर्मनाथजी परमेष्ठीनमः	च्यवन	तिथि शुरू 13-5-24 Time 26-52 से तिथि अंत 14-5-24 Time 28-20 मिनट तक

15-5-24	बुधवार	वैशाख वदी 8	¬ श्रीं अभिनंदनजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 15-5-24 सूर्य उदय से शुरू तिथि अंत 16-5-24 Time 06-23 मिनट तक सुबह
15-5-24	बुधवार	वैशाख वदी 8	¬ श्रीं सुमतिनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 15-5-24 सूर्योदय तिथि अंत 16-5-24 Time 6-49 मिनट तक
17-5-24	शुक्रवार	वैशाख वदी 9	¬ श्रीं सुमतिनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 16-5-24 Time 6-24 से तिथि अंत 17-5-24 Time 8-49 मिनट तक
18-5-24	शनिवार	वैशाख वदी 10	¬ श्रीं महावीरस्वामीजी सर्वज्ञायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 17-5-24 Time 8-50 से तिथि अंत 18-5-24 Time 11-23 मिनट तक
20-5-24	सोमवार	वैशाख वदी 12	¬ श्रीं विमलनाथजी परेमष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 19-5-24 Time 13-52 से तिथि अंत 20-5-24 Time 15-59 मिनट तक
21-5-24	मंगलवार	वैशाख वदी 13	¬ श्रीं अजितनाथजी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 20-5-24 Time 16-00 से तिथि अंत 21-5-24 Time 17-40 मिनट तक
29-5-24	बुधवार	जेठ वदी 6	¬ श्रीं श्रेयांसनाथजी परमेष्ठीने नमः	च्यवन	तिथि शुरू 28-5-24 Time 15-25 से तिथि अंत 29-5-24 Time 13-40 मिनट तक
31-5-24	शुक्रवार	जेठ वदी 8	¬ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 30-5-24 Time 11-15 से तिथि अंत 31-5-24 Time 9-39 मिनट तक
1-6-24	शनिवार	जेठ वदी 9	¬ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामीजी परमेष्ठीने	नमः मोक्ष	तिथि शुरू 31-5-24

					Time 9-40 से तिथि अंत 1-6-24 Time 7-25 मिनट तक सुबह
4-6-24	मंगलवार	जेठ वदी 13	¬ श्रीं शांतिनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 3-6-24 Time 24-20 से तिथि अंत 4-6-24 Time 22-02 मिनट तक
4-6-24	मंगलवार	जेठ वदी 13	¬ श्रीं शांतिनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 3-6-24 Time 24-20 से तिथि अंत 4-6-24 Time 22-02 मिनट तक
5-6-24	बुधवार	जेठ वदी 14	¬ श्रीं शांतिनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 4-6-24 Time 22-03 से तिथि अंत 5-6-24 Time 19-56 मिनट तक
11-6-24	मंगलवार	जेठ सुदी 5	¬ श्रीं धर्मनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 10-6-24 Time 16-17 से तिथि अंत 11-6-24 Time 17-28 मिनट तक
15-6-24	शनिवार	जेठ सुदी 9	¬ श्रीं वासुपूज्यस्वामी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 14-6-24 Time 24-06 से तिथि अंत 15-6-24 Time 26-33 मिनट तक
19-6-24	बुधवार	जेठ सुदी 12	¬ श्रीं सुपार्श्वनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 18-6-24 Time 6-26 से तिथि अंत 19-6-24 Time 7-29 मिनट तक
20-6-24	गुरुवार	जेठ सुदी 13	¬ श्रीं सुपार्श्वनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 19-6-24 Time 7-30 से तिथि अंत 20-6-24 Time 7-51 मिनट तक
25-6-24	मंगलवार	आषाढ़वदी 4	¬ श्रीं ऋषभदेवजी परमेष्ठिनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 24-6-24 Time 25-25 से

					तिथि अंत 25-6-24 Time 23-12 मिनट तक
28-6-24	शुक्रवार	आषाढ़वदी 7	¬ श्रीं विमलनाथजी पारंगतायमः	मोक्ष	तिथि शुरू 27-6-24 Time 18-41 से तिथि अंत 28-6-24 Time 16-28 मिनट तक
30-6-24	रविवार	आषाढ़वदी 9	¬ श्रीं नमिनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 29-6-24 Time 14-22 से तिथि अंत 30-6-24 Time 12-20 मिनट तक
12-7-24	शुक्रवार	आषाढ़सुदी 6	¬ श्रीं महावीरस्वामीजी परमेष्ठिने नमः	च्यवन	तिथि शुरू 11-7-24 Time 12-34 से तिथि अंत 12-7-24 Time 12-33 मिनट तक
14-7-24	रविवार	आषाढ़सुदी 8	¬ श्रीं अरिष्टनेमीजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 13-7-24 Time 15-07 से तिथि अंत 14-7-24 Time 17-27 मिनट तक
12-7-24	शुक्रवार	आषाढ़सुदी 6	¬ श्रीं महावीरस्वामीजी परमेष्ठिनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 11-7-24 Time 12-34 से तिथि अंत 12-7-24 Time 12-33 मिनट तक
19-7-24	शनिवार	आषाढ़वदी 14	¬ श्रीं वासुपूज्यस्वामी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 19-7-24 Time 19-34 से तिथि अंत 20-7-24 Time 18-00
24-7-24	बुधवार	श्रावण वदी 3	¬ श्रीं श्रेयांसनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 23-7-24 Time 10-25 से तिथि अंत 24-7-24 Time 7-31 मिनट तक
27-7-24	शनिवार	श्रावण वदी 7	¬ श्रीं अनंतनाथजी परमेष्ठीने नमः	च्यवन	तिथि शुरू 26-7-24 Time 23-32 से तिथि अंत 27-7-24

					Time 21-20 मिनट तक
28-7-24	रविवार	श्रावण वदी 8	¬ श्रीं नमिनेमीनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 27-7-24 Time 21-21 से तिथि अंत 28-7-24 Time 19-28 मिनट तक
29-7-24	सोमवार	श्रावण वदी 9	¬ श्रीं कुंथुनाथजी परेमष्ठीने नमः	च्यवन	तिथि शुरू 28-7-24 Time 19-29 से तिथि अंत 29-7-24 Time 17-56 मिनट तक
6-8-24	मंगलवार	श्रावण वदी 2	¬ श्रीं सुमतिनाथजी परमेष्ठीनमः	च्यवन	तिथि शुरू 5-8-24 Time 18-04 से तिथि अंत 6-8-24 Time 19-53 मिनट तक
9-8-24	शुक्रवार	श्रावण वदी 5	¬ श्रीं अरिष्टनेमीजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 8-8-24 Time 24-37 से तिथि अंत 9-8-24 Time 27-15 मिनट तक
10-8-24	शनिवार	श्रावण वदी 6	¬ श्रीं अरिष्टनेमीजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 9-8-24 Time 27-16 से तिथि अंत 10-8-24 Time 29-46 मिनट तक
13-8-24	मंगलवार	श्रावण वदी 8	¬ श्रीं पार्श्वनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 12-8-24 Time 9-32 से तिथि अंत 13-8-24 Time 7-32 मिनट तक
19-8-24	सोमवार	श्रावण वदी 15	¬ श्रीं मुनिसुव्रतजी परेमष्ठीने नमः	च्यवन	तिथि शुरू 18-8-24 Time 27-05 से तिथि अंत 19-8-24 Time 23-56 मिनट तक
25-8-24	रविवार	भादवा वदी 7	¬ श्रीं चन्द्रप्रभुजी पारगंतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 24-8-24 Time 24-32 से तिथि अंत 25-8-24 Time 21-40 मिनट तक

25-8-24	रविवार	भादवा वदी 7	¬ श्रीं शांतिनाथजी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 24-8-24 Time 29-32 से तिथि अंत 25-8-24 Time 27-40 मिनट तक
26-8-24	सोमवार	भादवा वदी 8	¬ श्रीं सुपार्श्वनाथजी परेमष्ठीनमः	च्यवन	तिथि शुरू 25-8-24 Time 27-41 से तिथि अंत 26-8-24 Time 26-20 मिनट तक
12-9-24	गुरूवार	भादवा वदी 9	¬ श्रीं सुविधिनाथजी पारगंतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 11-9-24 Time 23-48 से तिथि अंत 12-9-24 Time 23-33 मिनट तक
2-10-24	श्राद्ध बुधवार	आसोज वदी 30	¬ श्रीं अरिष्टनेमीजी सर्वज्ञायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 1-10-24 Time 21-41 से तिथि अंत 2-10-24 Time 24-19 मिनट तक
17-10-24	गुरूवार	आसोज सुदी 15	¬ श्रीं नमि(नेमि)नाथजी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 16-10-24 Time 20-42 से तिथि अंत 17-10-24 Time 16-56 मिनट तक
21-10-24	सोमवार	कार्तिक वदी 5	¬ श्रीं संभवनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 20-10-24 Time 28-18 से तिथि अंत 21-10-24 Time 26-30 मिनट तक
29-10-24	मंगलवार	कार्तिक वदी 12	¬ श्रीं अरिष्टनेमिजी परमेष्ठीने नमः	च्यवन	तिथि शुरू 28-10-24 Time 7-52 से तिथि अंत 29-10-24 Time 10-32 मिनट तक
29-10-24	मंगलवार	कार्तिक वदी 12	¬ श्रीं पद्मप्रभजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 28-10-24 Time 7-52 से तिथि अंत 29-10-24 Time 10-32 मिनट तक
30-10-24	बुधवार	कार्तिक वदी 13	¬ श्रीं पद्मप्रभजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 29-10-24

			धनतेरस		Time 10-33 से
					तिथि अंत 30-10-24 Time 13-16 मिनट दोपहर
1-11-24	शुक्रवार	कार्तिक वदी 30	¬ श्रीं महावीरस्वामीजी पारंगतायनमः दीपावली	मोक्ष	तिथि शुरू 31-11-24 Time 15-54 से तिथि अंत 1-11-24 Time 18-17 शाम मिनट तक
4-11-24	सोमवार	कार्तिक सुदि 3	¬ श्रीं सुविधिनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 3-11-24 Time 22-07 से तिथि अंत 4-11-24 Time 23-25 मिनट तक
13-11-24	बुधवार	कार्तिक सुदि 12	¬ श्रीं अरनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 12-11-24 Time 16-06 से तिथि अंत 13-11-24 Time 13-02 मिनट तक
20-11-24	बुधवार	मिगसर वदी 5	¬ श्रीं सुविधिनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 19-11-24 Time 17-30 से तिथि अंत 20-11-24 Time 16-50 मिनट तक
21-11-24	गुरुवार	मिगसर वदी 6	¬ श्रीं सुविधिनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 20-11-24 Time 16-51 से तिथि अंत 21-11-24 Time 17-04 मिनट तक
25-11-24	सोमवार	मिगसर वदी 10	¬ श्रीं महावीरस्वामीजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 24-11-24 Time 22-21 से तिथि अंत 25-11-24 Time 25-02 मिनट तक
26-11-24	मंगलवार	मिगसर वदी 11	¬ श्रीं पद्मप्रभजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 25-11-24 Time 25-03 से तिथि अंत 26-11-24 Time 27-48 मिनट तक
10-12-24	मंगलवार	मिगसर सुदि 10	¬ श्रीं अरनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 9-12-24 Time 30-03 से

					तिथि अंत 10-12-24 Time 27-43 मिनट तक
10-12-24	मंगलवार	मिगसर सुदि 10	¬ श्रीं पारसनाथजी पारसनाथनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 09-12-24 Time 30-03 से तिथि अंत 10-12-24 Time 27-43 मिनट तक
11-12-24	बुधवार	मिगसर सुदि 11	¬ श्रीं मल्लिनाथजी अर्हतेनमः मौन ग्यारस	जन्म	तिथि शुरू 10-12-24 Time 27-44 से तिथि अंत 11-12-24 Time 25-10 मिनट तक
11-12-24	बुधवार	मिगसर सुदि 11	¬ श्रीं अरनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 10-12-24 Time 27-44 से तिथि अंत 11-12-24 Time 25-10 मिनट तक
11-12-24	बुधवार	मिगसर सुदि 11	¬ श्रीं मल्लिनाथजी नाथायनमः	केवल	तिथि शुरू 10-12-24 Time 27-44 से तिथि अंत 11-12-24 Time 25-10 मिनट तक
11-12-24	बुधवार	मिगसर सुदि 11	¬ श्रीं मल्लिनाथजी नाथायनमः	केवल	तिथि शुरू 10-12-24 Time 27-44 से तिथि अंत 11-12-24 Time 25-10 मिनट तक
11-12-24	बुधवार	मिगसर सुदि 11	¬ श्रीं नमिनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 10-12-24 Time 27-44 से तिथि अंत 11-12-24 Time 25-10 मिनट तक
14-12-24	शनिवार	मिगसर सुदि 14	¬ श्रीं संभवनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 13-12-24 Time 19-42 से तिथि अंत 14-12-24 Time 16-59 मिनट तक
15-12-24	रविवार	मिगसर सुदि 15	¬ श्रीं संभवनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 14-12-24 Time 17-20 से तिथि अंत 15-12-24

					Time 14-32 मिनट दोपहर तक
25-12-24	बुधवार	पौष वदी 10	॥ श्रीं पार्श्वनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 24-12-24 Time 19-54 से तिथि अंत 25-12-24 Time 22-30 मिनट तक
26-12-24	गुरुवार	पौष वदी 11	॥ श्रीं पार्श्वनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 25-12-24 Time 22-31 से तिथि अंत 26-12-24 Time 24-44 मिनट तक
27-12-24	शुक्रवार	पौष वदी 12	॥ श्रीं चन्द्रप्रभजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 26-12-24 Time 24-45 से तिथि अंत 27-12-24 Time 26-27 मिनट तक
28-12-24	शनिवार	पौष वदी 13	॥ श्रीं चन्द्रप्रभजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 27-12-24 Time 26-28 से तिथि अंत 28-12-24 Time 27-33 मिनट तक
29-12-24	रविवार	पौष वदी 14	॥ श्रीं शीतलनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 28-12-24 Time 27-34 से तिथि अंत 29-12-24 Time 28-02 मिनट तक
5-1-25	रविवार	पौष सुदी 6	॥ श्रीं विमलनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 4-1-25 Time 22-03 से तिथि अंत 5-1-25 Time 20-16 मिनट तक
8-1-25	बुधवार	पौष सुदी 9	॥ श्रीं शांतिनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 7-1-25 Time 16-27 से तिथि अंत 8-1-25 Time 14-26 मिनट तक
10-1-25	शुक्रवार	पौष सुदी 11	॥ श्रीं अजितनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 9-1-25 Time 12-23 से तिथि अंत 10-1-25 Time 10-20 मिनट तक

12-1-25	रविवार	पौष सुदी 14	¬ श्रीं अभिनंदनजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 11-1-25 Time 30-35 से तिथि अंत 12-1-25 Time 29-03 मिनट तक
13-1-25	सोमवार	पौष सुदी 15	¬ श्रीं धर्मनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 12-1-25 Time 29-04 से तिथि अंत 13-1-25 Time 27-57 मिनट तक
20-1-25	सोमवार	माघ वदी 6	¬ श्रीं पद्मप्रभुजी परमेष्ठीनमः	च्यवन	तिथि शुरू 19-1-25 Time 07-32 से तिथि अंत 20-1-25 Time 09-59 मिनट तक
26-1-25	रविवार	माघ वदी 12	¬ श्रीं शीतलनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 25-1-25 Time 20-33 से तिथि अंत 26-1-25 Time 20-55 मिनट तक
26-1-25	रविवार	माघ वदी 12	¬ श्रीं शीतलनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 25-1-25 Time 20-55 से तिथि अंत 26-1-25
27-1-25	सोमवार	माघ वदी 13	¬ श्रीं ऋषभदेवजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 26-1-25 Time 20-56 से तिथि अंत 27-1-25 Time 20-35 मिनट तक
29-1-25	बुधवार	माघ वदी 30	¬ श्रीं श्रेयांसनाथजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 28-1-25 Time 19-37 से तिथि अंत 29-1-25 Time 18-06 मिनट तक
31-1-25	शुक्रवार	माघ सुदी 2	¬ श्रीं अभिनंदनजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 30-1-25 Time 16-12 से तिथि अंत 31-1-25 Time 14-00 मिनट तक
31-1-25	शुक्रवार	माघ सुदी 2	¬श्रीं वासुपूज्यजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 30-1-25 Time 16-12 से

					तिथि अंत 31-1-25 Time 14-00 मिनट तक
1-2-25	शनिवार	माघ सुदी 3	¬ श्रीं धर्मनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 31-1-25 Time 14-01 से तिथि अंत 1-2-25 Time 11-39 मिनट तक
1-2-25	शनिवार	माघ सुदी 3	¬ श्रीं विमलनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 31-1-25 Time 14-01 से तिथि अंत 1-2-25 Time 11-39 मिनट तक
2-2-25	शनिवार	माघ सुदी 4	¬ श्रीं विमलनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 1-2-25 Time 11-40 से तिथि अंत 2-2-25 Time 09-15 मिनट तक
5-2-25	बुधवार	माघ सुदी 8	¬ श्रीं अजितनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 4-2-25 Time 26-33 से तिथि अंत 5-2-25 Time 24-36 मिनट तक
6-2-25	गुरूवार	माघ सुदी 9	¬ श्रीं अजितनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 5-2-25 Time 24-37 से तिथि अंत 6-2-25 Time 22-54 मिनट तक
9-2-25	रविवार	माघ सुदी 12	¬ श्रीं अभिनंदनजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 8-2-25 Time 20-17 से तिथि अंत 9-2-25 Time 19-26 मिनट तक
10-2-25	सोमवार	माघ सुदी 13	¬ श्रीं धर्मनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 9-2-25 Time 19-27 से तिथि अंत 10-2-25 Time 18-58 मिनट तक
18-2-25	मंगलवार	फागुन वदी 6	¬ श्रीं सुपार्श्वनाथजी सर्वज्ञायनमः वृद्धि तिथि	केवलज्ञान	तिथि शुरू 17-2-25 Time 28-54 से तिथि अंत 19-2-25

					Time 07-33 मिनट तक
20-2-25	गुरुवार	फागुन वदी 7	¬ श्रीं सुपार्श्वनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 19-2-25 Time 07-34 से तिथि अंत 20-2-25 Time 09-59 मिनट तक
20-2-25	गुरुवार	फागुन वदी 7	¬ श्रीं चन्द्रप्रभजी सर्वज्ञायनमः	केवल	तिथि शुरू 19-2-25 Time 07-34 से तिथि अंत 20-2-25 Time 09-59 मिनट तक
22-2-25	शनिवार	फागुन वदी 6	¬ श्रीं सुविधिनाथजी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 21-2-25 Time 11-59 से तिथि अंत 22-2-25 Time 13-20 मिनट तक
24-2-25	सोमवार	फागुन वदी 11	¬ श्रीं ऋषभदेवजी सर्वज्ञायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 23-2-25 Time 13-57 से तिथि अंत 24-2-25 Time 13-45 मिनट तक
25-2-25	मंगलवार	फागुन वदी 12	¬ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामीजी सर्वज्ञायनमः	केवलज्ञान	तिथि शुरू 24-2-25 Time 13-46 से तिथि अंत 25-2-25 Time 12-48 मिनट तक
25-2-25	मंगलवार	फागुन वदी 12	¬ श्रीं श्रेयांसनाथजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 24-2-25 Time 13-46 से तिथि अंत 25-2-25 Time 12-48 मिनट तक
26-2-25	बुधवार	फागुन वदी 13	¬ श्रीं श्रेयांसनाथजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 25-2-25 Time 12-49 से तिथि अंत 26-2-25 Time 11-09 मिनट तक
27-2-25	गुरुवार	फागुन वदी १४	¬ श्रीं वासुपूज्यस्वामीजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 26-2-25 Time 11-10 से तिथि अंत 27-2-25 Time 08-55 मिनट तक

28-2-25	शुक्रवार	फागुन वदी अमावस्या	¬ इसलिए 27-02-25 वासुपूज्यस्वामीजी जप-तप का कल्याणक करना		
1-3-25	शनिवार	फागुन सुदि 2	¬ श्रीं अरनाथजी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 28-2-25 Time 27-17 से तिथि अंत 1-3-25 Time 24-10 मिनट तक
3-3-25	सोमवार	फागुन सुदि 4	¬ श्रीं मल्लीनाथजी परमेष्ठीनमः	च्यवन	तिथि शुरू 2-3-25 Time 21-04 से तिथि अंत 3-3-25 Time 18-03 मिनट तक
7-3-25	शुक्रवार	फागुन सुदि 8	¬ श्रीं संभवनाथजी परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 6-3-25 Time 10-52 से तिथि अंत 7-3-25 Time 09-19 मिनट तक
11-3-25	मंगलवार	फागुन सुदि 12	¬ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामीजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 10-3-25 Time 07-46 से तिथि अंत 11-3-25 Time 8-15 मिनट तक
11-3-25	मंगलवार	फागुन सुदि 12	¬ श्रीं मल्लिनाथजी पारंगतायनमः	मोक्ष	तिथि शुरू 10-3-25 Time 07-46 से तिथि अंत 11-3-25 Time 8-15 मिनट तक
18-3-25	मंगलवार	चैत्र वदी 4	¬ श्रीं पार्श्वनाथजी परमेष्ठीनेनमः	केवल	तिथि शुरू 17-3-25 Time 19-35 से तिथि अंत 18-3-25 Time 22-10 मिनट तक
18-3-25	मंगलवार	चैत्र वदी 4	¬ श्रीं पार्श्वनाथजी सर्वज्ञायनमः	च्यवन	तिथि शुरू 17-3-25 Time 19-35 से तिथि अंत 18-3-25 Time 22-10 मिनट तक

19-3-25	बुधवार	चैत्र वदी 5	¬ श्रीं चन्द्रप्रभु परमेष्ठीनेनमः	च्यवन	तिथि शुरू 18-3-25 Time 22-11 से तिथि अंत 19-3-25 Time 24-38 मिनट तक
22-3-25	शनिवार	चैत्र वदी 8	¬ श्रीं ऋषभदेवजी अर्हतेनमः	जन्म	तिथि शुरू 21-3-25 Time 28-25 से तिथि अंत 22-3-25 Time 29-24 मिनट तक
23-3-25	रविवार	चैत्र वदी 9	¬ श्रीं ऋषभदेवजी नाथायनमः	दीक्षा	तिथि शुरू 22-3-25 Time 29-25 से तिथि अंत 23-3-25 Time 29-39 मिनट तक

इति संवत् 2081 कल्याणक तिथि संपूर्ण

ग्रहण विवरण

1. खण्ड ग्रास - चन्द्र ग्रहण

18 Sept. 2024 भारत में यह ग्रहण नहीं दिखेगा

ग्रहण समय - सवेरे - 7.43 से 8.46 मिनट तक

2. कंकण सूर्य ग्रहण - 2/3 अक्टूबर 2024

रात 21.13 से 27.17 मिनट मध्य रात्रि पर घटेगा

2/3 अक्टूबर

भारत में नहीं दिखेगा

3. खग्रास चन्द्र गहण

यह चन्द्र ग्रहण (14 मार्च 2025)

यह चन्द्र ग्रहण प्रातः 10.40 मिनट से दोपहर 14.18 तक रहेगा

भारत में नहीं दिखेगा

4. खण्ड सूर्य ग्रहण - 29 मार्च 2025

भारत में नहीं दिखेगा

ग्रहण शुरू 14.21 से 18.14 तक

महाभारत युद्ध के समय जब अभिमन्यु मारा गया तब अर्जुन बहुत दुःख से भरा कृष्ण भगवान के पास अभिमन्यु का मृत शरीर लेकर गया कि इसे फिर से जिला दें।

कृष्ण ने उसकी पीड़ा समझते हुए कहा - 'मैं इसे जिंदा कर दूंगा पर पहले यह लोटे का पानी नदी में डाल आओ। अर्जुन नदी में डाल आया तो कृष्ण बोले, अभी वही पानी वापस लौटे में भर लाओ।' अर्जुन बोला - 'जल-जल में मिलकर एक हो गया। वही जल कैसे भरकर लाऊं?' तब कृष्ण ने कहा - 'आत्मा-आत्मा से मिलकर एक हो गई। अब वही अभिमन्यु कहां से आए?' ❖❖

स्वागत गीत - तर्ज : सूरज कब दूर गगन से

- सौ. सूरजबाई बोहरा जैन-राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, चेन्नई (तमिलनाडु)

पुण्य उदय हुये है हमारे, युवाचार्य भगवन है आज पधारे,
खिल उठी है बगिया दिल की, मन हर्षित हुये हमारे
प्रांगण में आपका स्वागत है, कि तन-मन से स्वागत है
प्रांगण में आपका स्वागत है, चरणों में वंदन है (२)

(1) लीलाबाई के मंदिर की है, तू सबसे प्यारी मूरत (२)
भगवान नजर आये, जब देखे इनकी सूरत
हे श्रमण संघ के उजियारे, गुरु आनंद के आंखों के तारे
स्वार्थीलालजी के वारे न्यारे, शिव भगवन के शिष्य है प्यारे
प्रांगण में आपका .....
प्रांगण में आपका स्वागत है चरणों में वंदन है (२)

(2) अंबर में जैसे चमके, सूरज चाँद सितारे (२)
गुरुवर आपके आने से, दिखते वही नजारे
थी जिसकी हमको प्रतीक्षा, वो शुभ अवसर है आया
नैनों में चमक आई जो, दीदार आपका पाया
प्रांगण में आपका .....
प्रांगण में आपका स्वागत है चरणों में वंदन है (२)

(3) हितेन्द्रऋषि शिष्य है प्यारे, धवल ऋषिजी तप को है धारण (२)
सेवा में रहते आपके सारे
प्रांगण में आपका .....
प्रांगण में आपका स्वागत है चरणों में वंदन है (२)

एक राजा मंत्रियों को साथ लेकर नदी पर गया। सबने नदी पर गया। सबने नदी में झांका तो उन्हें लगा कि राजा का कीमती हीरा नदी में गिर गया है। फिर तो बहुत ढूंढ मची पर नहीं मिला। राजा अलग जाकर पेड़ के नीचे बैठ गया। मंत्री राजा के पास आए कि हीरा नहीं मिला। देखा तो राजा के मुकुट में ही लगा है। नदी में गिरा ही नहीं था। परछाईं देखकर भ्रम हो गया।

सिद्धांत - भगवान पास ही है, हम बाहर ढूंढ रहे हैं। ❖❖

।।जयगुरु जीवराज संपत।। ।।जयगुरुणी धीरज प्रकाश।।

प.पू. डॉ. प्रतिभाजी म.सा. का जीवन परिचय

जन्म : १० अक्तुबर १९५५ आसोज संतोषपिंपरी, जि. हिंगोली
पिताजी/माताजी : सेठ श्री. मिठूलालजी बाफना, सौ. झंकारबाई बाफना
दिक्षा स्थान : नांदेड (महाराष्ट्र), २९ नवम्बर १९७३
अनुयायी : गुरुदेव कर्नाटक गजकेशरी घोर तपस्वी प.पू. श्री गणेशलालजी म.सा.
गुरुदेव : दक्षिण केशरी, घोर तपस्वी प.पू. श्री मिश्रीलालजी म.सा.
चरित्र चूडामणी प.पू. श्री जीवराजजी म.सा.
गुरुणीसा : महाराष्ट्र प्रवर्तिनी ज्ञान गंगोत्री प.पू. श्री प्रभाकंवरजी म.सा.
अध्ययन : जैन सिद्धांतचार्य, साहित्य रत्न, एम.ए., नवकार मंत्र में पी.एचडी, जैनागम, व्याकरण, न्याय, दर्शन का गहन अध्ययन, गुजराथी, मराठी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी भाषाओं पर प्रभुत्व
पदवियाँ : गुरुपरिवार द्वारा कोटा संघ प्रमुखा, पुणे संघ द्वारा नवकार आराधिका, श्री जीवराजजी म.सा. द्वारा वि..वीरपुत्री, गुजरात युनिव्हर्सिटी द्वारा डॉक्टरेट, श्री रुपमुनिजी म.सा. द्वारा दक्षिण सिंहनी, श्री कुंदनऋषिजी म.सा. द्वारा महाराष्ट्रसिंहनी
शिष्याएं : पू. प्रफुल्लाजी म.सा., पू. सिध्दीसुधाजी म.सा., पू. पुनिताजी म.सा., पू. दक्षिताजी म.सा., पू. उदिताजी म.सा., पू. पुण्यस्मिताजी म.सा., पू. प्रनिधीजी म.सा., पू. सुविधीजी म.सा., पू. विशुध्दिजी म.सा., पू. समितीजी म.सा., पू. गरिमाजी म.सा., पू. महिमाजी म.सा., पू. प्रणयाजी म.सा., पू. महतीजी म.सा., पू. प्रणतीजी म.सा., पू. संप्रज्ञाजी म.सा.
विचरण क्षेत्र : महाराष्ट्र, कर्नाटका, तमिळनाडु, तेलंगना, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश,

प्रेरणा से
- वर्धमान गणेश प्रतिष्ठान, गोकुळवाडी, बदनापुर
- गुरु गणेश जैन महासंघ, मालोश्री वृद्धाश्रम, अहमदनगर
- गुरु गणेश तपोधाम, भुवनगिरी (त्रयनगर)
- गुरु गणेश तपोधाम, भिलाड़ा, राजस्थान
- जैन सोशल ऑर्गनाइजेशन (भारत)
- गुरु गणेश जैन गौशाला, ताम्बरम, चेन्नई

पावन बने क्षेत्र चातुर्मास से

१९७४ किनगांव जट्टू	१९८७ अमरावती	२००० पुणे, चिंचवड	२०१३ लातूर
१९७५ अमरावती	१९८८ बडनेरा	२००१ पाथर्डी	२०१४ औरंगाबाद
१९७६ नागपुर	१९८९ नेर	२००२ अहमदनगर	२०१५ इंदौर
१९७७ कटंगी	१९९० शेवली	२००३ चेन्नई, आरकोणम	२०१६ रायचूर
१९७८ भंडारा	१९९१ लातूर	२००४ सिकेन्द्राबाद	२०१७ पुणे, आदिनाथ
१९७९ राळेगाव	१९९२ यवतमाळ	२००५ पुणे, बिबवेवाडी	२०१८ पुणे, प्राधिकरण
१९८० आर्णी	१९९३ परभणी	२००६ नाशिक	२०१९ जालना
१९८१ वणी	१९९४ राळेगाव	२००७ औरंगाबाद	२०२० चेन्नई, ताम्बरम
१९८२ यवतमाळ	१९९५ अकोला	२००८ जालना	२०२१ चेन्नई, ओल्ड पेठ
१९८३ औरंगाबाद	१९९६ श्रीरामपुर	२००९ वैजापुर	२०२२ गोकुळवाडी
१९८४ नांदेड	१९९७ जामखेड़	२०१० शिर्डी	२०२३ गोकुळवाडी
१९८५ ढाणकी	१९९८ नागपुर	२०११ जालना	
१९८६ परभणी	१९९९ पुणे, आदिनाथ	२०१२ सिकेन्द्राबाद	

कोटा संघ प्रमुखा, महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पूज्य डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा. के श्रीचरणों में जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली परिवार का सादर वंदन-नमन-अभिंनदन! नव पद प्रतिष्ठा - आचार्य भंगवत पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. वरिष्ठ प्रर्वर्तक पू. श्री कुंदनऋषिजी म.सा. के द्वारा महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पद से विभूषित होने पर हार्दिक मंगल कामनाएं। आपके अनुभवी कुशल मार्गदर्शन में श्रमण संघ उतरोत्तर प्रगति करें, जन-जन आपके पुण्य आशीर्वाद से लाभान्वित हो। ❖❖

मार्च 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति मई माह में भी गति प्रदान की गई है। हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मई माह में भी अप्रत्याशित कार्य हुए। मई माह में राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 3,09,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की गई है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 1,34,500 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया। 16,500 रुपये की धनराशि पूज्य गुरु भगवंत के लिए व्हील चेयर क्रय करने में खर्च की गई। इस प्रकार कुल 5,21,000 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में मई माह में सेवार्थ खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन आदि की टीम की ओर से तहेदिल से आभार।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

सहयोग हेतु अपील

DONATE

अत्यंत गंभीर बीमारी से ग्रसित मास्टर वेहंत जैन की सहायतार्थ निवेदन

श्री सुशील जैन, त्रिनगर (जैन महासंघ, दिल्ली प्रदेश में सेवारत) के सुपौत्र मास्टर वेहंत जैन सुपुत्र श्री मोहित जैन, जिनकी आयु मात्र 15 माह है, वे स्पाइनल मस्कुलर एट्रॉफी (Spinal Muscular Atrophy) नामक दुर्लभ एवम् अनुवांशिक बीमारी से ग्रसित हैं। यह बीमारी शरीर की मांसपेशियों की शक्ति एवम् गति को बुरी तरह से प्रभावित कर देती है । इस रोग की गंभीरता को देखते हुए डॉक्टरों के परामर्श अनुसार इस रोग का उपचार यथाशीघ्र कराया जाना बहुत ज़रूरी है। इस रोग के उपचार का खर्च करोड़ों में है । अतः समाजजनों से यह विनम्र आग्रह है कि वे मास्टर वेहंत जैन के जीवन को सामान्य बनाने में अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करें ।

आर्थिक सहायता हेतु उपरोक्त QR कोड का प्रयोग कर सकते हैं । इस राशि पर आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत छूट उपलब्ध है । राशि दान करने का लिंक - https://www.impactguru.com/fundraiser/help-vehant-jain

प्रेषक एवं निवेदक - मोहित जैन : मो. **9871205883**, सुशील जैन : मो. **7503903448**

समाचार प्रकाश

तप : कर्म निर्जरा का सर्वोत्तम साधन है - आचार्य शिवमुनि

लाभार्थी नितिनकुमार जैन ने श्रेयांसकुमार बन करया 116 तपस्वियों का पारणा

सूरत (गुजरात) : शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित अक्षय-तृतीया वर्षीतप पारणा महोत्सव, श्रमण संघ स्थापना दिवस व गुरु ज्ञान जन्म जयंती के पावन अवसर पर श्री लब्धि विक्रम राजयश सूरिश्वर जैन तीर्थ धाम, बलेश्वर, सूरत के प्रांगण में वर्षीतप के तपस्वी और आए हुए हजारों श्रद्धालु, श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरक उद्‌बोधन संदेश प्रदान करते हुए श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज की तिथि अक्षय तृतीया इसका महत्व प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान की निरन्तर निर्जल 13 महीने की कठिन तपस्या के बाद पारणे के महत्व को लेकर आती है। करोड़ो वर्ष बीत जाने के बाद भी यह तिथि अक्षय है, शाश्वत है, कभी न मिटने वाली है। भगवान् ऋषभदेव इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर है। धर्म तीर्थ की स्थापना तीर्थंकर करते है। युवराज अवस्था में कुमार ऋषभ ने आर्य सभ्यता की नींव डाली थी। कल्पवृक्ष जब समाप्त हुए तो भगवान ने असि मसि कृषि का ज्ञान सामान्य जनता को दिया था। पुरुषों को 72 तो महिलाओं को 64 कलाएं सिखाई थी। तीर्थंकर सूर्य के समान होते है। सूर्य जैसे दूर रहकर भी अपनी किरणों से कमलों को खिला देता है वैसे ही तीर्थंकर अपने ज्ञान के प्रकाश से मानव मात्र को प्रकाशित करते है।

अक्षय तृतीया का पर्व आध्यात्मिक पर्व है। आज के दिन का महत्व दान और तप से है, आज के दिन भगवान ऋषभदेव ने 13 महीने की कठिन तपस्या के बाद राजा श्रेयांस कुमार से ईक्षुरस ग्रहण कर पारणा किया था, उसी परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए आज भी साधु-साध्वीवृंद एवं श्रावक-श्राविका वर्षीतप की आराधना करते है। तप आत्मा का श्रृंगार है, तप करना कोई साधारण काम नहीं है, तप वही कर सकता है जिसका मनोबल मजबूत होता है, तप से तपकर ही जीवन कुंदन बनता है जो तपस्या नहीं कर सकते वह अनुमोदना जरूर करें। तप का मुख्य लक्ष्य कषाय और इन्द्रियों को वश करना है। तप कर्म निर्जरा का सर्वोत्तम साधन है।

मुझे आज स्मरण हो रहा है मेरी वर्षीतप की तपस्या कैसे प्रारम्भ हुई? उन दिनों मेरा प्रवास ब्यावर में था। वहीं के सुश्रावक श्री चांदमलजी विनायक्या दर्शन हेतु उपस्थित हुए और उन्होंने प्रेरणा दी कि मुनि जी वर्षीतप करना प्रारम्भ करो और लोगस्स का पाठ भी करो। एक श्रावक एक मुनि को प्रेरित करें यह सोचकर मैंने तपस्या प्रारम्भ कर दी, परन्तु राजस्थान में गर्मी भीषण होती है ब्यावर प्रवास के बाद मेरा चातुर्मास जोधपुर में था। वातावरण की प्रतिकूलता से मैंने वर्षीतप करना छोड़ दिया। श्रावक श्री चांदमलजी पुनः जोधपुर चातुर्मास में दर्शनार्थ उपस्थित हुए और उन्होंने वर्षीतप की साता पृच्छा की तो मैंने सहज भाव से कह दिया कि वातावरण की प्रतिकूलता से मैंने तपस्या छोड़ दी है। श्रावक जी ने पुनः प्रेरणा दी कि आपको वर्षीतप करना चाहिए। तब मैंने पुनः तपस्या प्रारम्भ कर दी। तब से अब तक यह तपस्या निर्विघ्न रूप से गतिमान है। ऐसा नहीं है कि तप करते हुए परीषह नहीं आयेंगे। बीते दिनों में मेरे भी कई निकाचित कर्म उदय में आए। ऑपरेशन जैसे स्थितियाँ भी उत्पन्न हुई, पर मैंने तपस्या नहीं छोड़ी। आज कल कुछ तपस्वी जरा सी प्रतिकूलता आने पर घबरा जाते हैं। तपस्या की है तो निश्चित है कर्म उदय में आयेंगे, आए हुए कर्मों को क्षय करना यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

अक्षय तृतीया के दिन ही श्रमणसंघ की स्थापना हुई थी। 22 आचार्यों ने अपने आचार्य पद का त्यागकर श्रमण संघ की स्थापना की एवं एक आचार्य, एक समाचारी की व्यवस्था प्रदान की। मैं अपने समस्त पूर्वाचार्यों को नमन करता हूँ। यह श्रमण संघ सदैव जयवंत था, श्रमण संघ अनेक पुष्पों का गुलदस्ता है। यह संघ निदंनीय नहीं वंदनीय है। पूर्वाचार्यों ने इस

संघ को अपनी त्याग और तपस्या से सींचा है। वर्तमान में सभी पदाधिकारी अपने-अपने कार्य के द्वारा संघ को नई ऊँचाइयां प्रदान कर रहे है। आज पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञानमुनिजी का जन्म शताब्दी वर्ष समाप्त हो रहा है। गुरुदेव की अनन्त कृपा रही जिन्होंने मुझे संयम प्रदान किया है उनके उपकार मैं जीवन पर्यंत भूल नहीं सकता हूँ। मैंने उनसे साधना सीखने की प्रार्थना की और उन्होंने मुझे उस साधना को प्राप्त करने के लिए अनेक आशीर्वाद प्रदान किए। वे एक सरलात्मा संत थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा. एवं श्रमण संघ की सम्पूर्ण मनोयोग से सेवा की। आज वे जहां पर भी विराजमान है उनका मुक्ति मार्ग प्रशस्त हो, यही मंगल भावना।

आज वर्षीतप पारणे के लाभार्थी एन.एन. जैन परिवार के श्री नितिन जैन श्रेयांसकुमार बने है और सबको ईक्षुरस प्रदान करके पारणा कराने वाले है। ऐसा सरल मृदु स्वभावी और धर्म समर्पित परिवार को बहुत-बहुत साधुवाद है। श्रमण संघ निष्ठा पत्र पर विशेष उद्बोधन अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म. ने श्रमण संघ स्थापना दिवस विजन 2052 को जनमानस के समक्ष रखते हुए बतलाया कि आज समग्र विश्व में श्रमण संघ का 73वाँ स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। आने वाले 2026 में हम श्रमण संघ स्थापना हीरक महोत्सव मनाएंगे। श्रमण संघ अनेक प्रमुख आचार्यों के समर्पण की कहानी है। श्रमण संघ जयवंत था, है और रहेगा। श्रमण संघ में अनेक प्रकार के मोती है। वर्तमान में श्रमण संघ की अनेक साधु-साध्वी अपने प्रकार से प्रभावना कर रहे हैं। साधु तो एकत्रित हो गए, परंतु श्रावक बिखर गए हैं। उन श्रावकों को एकत्रित करने हेतु युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेंद्रऋषिजी म. की संकल्पना एवं आचार्यश्रीजी के मार्गदर्शन से यह श्रमण संघ निष्ठा पत्र तैयार किया गया है, जिसे श्रमण संघ के सभी पदाधिकारी साधु-साध्वियों ने स्वीकृति प्रदान की है। जो साधु श्रमण संघ बनने के बाद श्रमण संघ को छोड़ गए, उन्होंने अपने स्थानक और श्रावक दोनों को अलग कर लिया है। अब आवश्यकता है श्रमण संघ अपने श्रावकों में सुदृढ़ता लाए और श्रमण संघीय स्थानक तैयार हो। मैं प्रत्येक श्रमण संघीय श्रद्धावान श्रावकों से यही कहना चाहूंगा कि कोई भी श्रमण संघ की निंदा ना करते हुए उसके गुण को देखें और गुणानुवाद में अपना समय लगाए।

इससे पूर्व श्रमण संघीय प्रमुखमंत्री श्री शिरीषमुनि जी ने मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरूआत की। उसके पश्चात् प्रवचन प्रभाकर श्री शमितमुनिजी, महासाध्वी श्री पूर्वाजी, महासाध्वी श्री विश्वासजी, महासाध्वी श्री संयमप्रभाजी, महासाध्वी श्री चारित्रशिलाजी ने आज के इस पावन अवसर पर अपने उद्गार भजन एवं प्रवचन के माध्यम से रखे। सहमंत्री श्री शुभममुनिजी ने मधुर भजन गाकर सबको मंत्रमुग्ध किया। आज के इस शुभ अवसर पर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा. द्वारा टीकाकृत श्री स्थानांग सूत्र के प्रथम और द्वितीय भाग का विमोचन श्रावक समिति एवं शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउंडेशन के पदाधिकारी गणों ने किया। इस अवसर पर श्रीमती मनीषा सुरेशजी संचेती द्वारा स्वरचित भजन की पुस्तक स्वरागिनी का विमोचन संचेती परिवार ने किया।

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर कुछ श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने अपने विचार सभा के मध्य में रखें, जिसमें कोणिक जैन ने वर्तमान में भटकते युवाओं को पुनः कैसे धर्म में जोडे, देव, गुरु धर्म में उनके आस्था कैसे दृढ़ हो इस विषय पर प्रभावी वक्तव्य प्रदान किया। जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमति पुष्पाजी गोखरू, श्रावक समिति के राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमान मुन्नालालजी जैन, श्रावक समिति के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री रमेशजी भंडारी आदि ने अपनी भावनाएं आचार्यश्रीजी के समक्ष प्रस्तुत की। इस अवसर पर जय सामोता ने स्वलिखित परमवीर चक्र शैतान सिंह किताब आचार्यश्रीजी को भेंट की। आचार्यश्रीजी के सान्निध्य में पिछले सवा तीन वर्षों से अध्ययनरत वैरागी शिवांश जैन के सांसारिक परिवार द्वारा दीक्षा आज्ञा पत्र बड़े ही हर्षोल्लास के साथ आचार्य भगवन को प्रदान किया।

इस अवसर पर जयंती कुकड़ा, विकास सिंघवी, आकाश मादरेचा, सुनील विसलोत, अमित मेहता, हितेश मोंटू चपलोत, गौतम मेहता, सुरेश संचेती आदि सेवाभावी कार्यकर्ताओं का सेवा सम्मान किया गया।

मंगल पाठ के पश्चात श्रेयांस कुमार लाभार्थी एन.एन. जैन परिवार के श्री नितिन जैन परिवार द्वारा सर्वप्रथम आचार्यश्रीजी को ईक्षुरस बहराया गया। तदनंतर सभी तपस्वियों को ईक्षुरस प्रदान करने की विनंती की। शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा समस्त तपस्वियों का अभिनंदन पत्र प्रदान कर स्वागत किया गया।

सभा का मंच संचालन बहुत ही सुंदर तरीके से उपाध्यक्ष श्री अशोकजी मेहता ने किया। हजारों की संख्या में उपस्थित जनमेदनी बार-बार शिवाचार्य भगवन के तप एवं उपस्थित तपस्वियों का अनुमोदन कर अपने आप को धन्य महसूस कर रही थी। प्रत्येक तपस्वी एवं आगंतुक यही कह रहा था कि प्रतिवर्ष पारणे करने हो तो आचार्यश्रीजी के श्रीचरणों में ही करने चाहिए, बहुत ही सुंदर कार्यक्रम आचार्यश्रीजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। लाभार्थी नितिनकुमार जैन ने श्रेयांस कुमार बनकर करवाया 116 तपस्वियों का पारणा लब्धि धाम में भव्य पारणा महोत्सव संपन्न हुआ।

अक्षय-तृतीया के पावन पर्व पर वृहत् कार्यक्रम का आयोजन

न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी, दिल्ली : अक्षय तृतीया के पावन दिवस 10-05-2024 को एस.एस. जैन सभा न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी, जे.आर. जैन भवन में विशाल जनसमुदाय के समक्ष एक वृहत् कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें उत्तर भारत प्रवर्तिनी श्रमणी सूर्या पू. डॉ. श्री सरिताजी म.सा., उप-प्रवर्तिनी दिव्य साधिका पू. श्री रश्मिजी म.सा. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। जहाँ एक ओर जैन धर्म के आदि तीर्थंकर प्रभु ऋषभदेव के वर्षीतप पारणे के शुभ दिवस पर वर्षीतप साधिका तपस्विनी साध्वियों, जिनमें 35 वर्षों से वर्षीतप करने वाली घोर तपस्विनी डॉ. श्री शुभाजी (पिंकी) म.सा., 12-12 वर्षों से तपस्या में रत आगम ज्ञानाधी साध्वी डॉ. श्री शैलीजी म.सा., साध्वी श्री शुचिताजी म.सा. तथा 5 वर्षीय एकांतर तपलीन साध्वी श्री शैलजाजी म.सा. के पारणे करवाने का लाभ श्रीसंघ को प्राप्त हुआ। वहीं दूसरी ओर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ का 72वाँ स्थापना दिवस भी पूर्ण निष्ठापूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर भजन गायिका श्रीमती नीलमजी सिंघवी जैन, श्वेताजी नाहर जैन, सुन्दरजी एवं पुष्पाजी बोकड़िया ने भी अपने मन के विचार भजन आदि के माध्यम से व्यक्त किए। अध्यक्ष श्री सुभाषजी ओसवाल जैन जी ने श्रमण संघ की महिमा, गरिमा तथा प्राचीन आचार्यों की गुण गौरव गाथा को अपने वक्तव्य के द्वारा अत्यंत भावुक रूप से प्रस्तुत किया एवं अंत में श्रीमान् अशोकजी लोढ़ा ने सभी को धन्यवाद देते हुए भगवान महावीर सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के निर्माण हेतु इस अवसर पर दानवीरों द्वारा प्रदत्त दान की अनुमोदना की। अंत में श्रीमान् सुभाषजी ओसवाल जैन के सुपौत्र श्री कनवजी ओसवाल जैन एवं दौहित्र आदित्य जैन ने अपने परिवार की ओर से महासाध्वियों को इक्षु रस बहराते हुए पारणे का लाभ लिया। इसी के साथ विभिन्न क्षेत्रों से पधारे हुए नन्हे-नन्हें श्रेयांस कुमारों में अयांश, क्यांश तथा अभिराज जैन आदि ने भी पारणा करवाया, तत्पश्चात् समस्त श्रद्धालुजनों ने इक्षु रस बहराकर पुण्यार्जन करते हुए गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम में दिल्ली, एनसीआर के सभी क्षेत्रों जैसे रोहिणी, पीतमपुरा, नोएडा, गुरुग्राम, गाजियाबाद, फरीदाबाद, इन्द्रपुरी, करोल बाग, साउथ दिल्ली, शाहदरा, पंजाबी बाग, रानी बाग, पश्चिम विहार आदि से भी विशाल संख्या में श्रावक-श्राविका उपस्थित हुए। श्री सुभाषजी ओसवाल जैन परिवार की ओर से सभी के लिए गौतम प्रसादी की सुंदर रूपेण व्यवस्था की गई।

इसके अलावा दिनांक 24 मई 2024 को जे.आर. जैन भवन के प्रांगण में श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, ध्यानयोगी, युगप्रधान आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. का 24वाँ आचार्य पद चादर समर्पण दिवस समारोह पूर्वक आयोजित किया गया।

प्रेषक : अशोक लोढ़ा जैन

महाराष्ट्र प्रवर्तिनी चादर महोत्सव कार्यक्रम धूमधाम से मनाया

पुणे (महाराष्ट्र) : पुणे सकल संघ के पुण्योदय से वर्धमान सांस्कृतिक केन्द्र, गंगाधाम-शत्रुंजय रोड़, पुणे में कर्नाटक गजकेसरी, घोर तपस्वी पू. श्री गणेशीलालजी म.सा. एवं आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. की असीम कृपा से श्रमण संघ के शिखर पुरुष आचार्य भगवंत, ध्यान योगी परम पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. एवं महाराष्ट्र प्रवर्तक पूज्य

श्री कुंदनऋषिजी म.सा. की आज्ञा से महाराष्ट्र एवं दक्षिण सिंहणी नवकार आराधिका पू. डॉ. श्री प्रतिभाजी म.सा. को महाराष्ट्र प्रवर्तीनी पद से अलंकृत किया है। इस उपलक्ष्य में संतों की पावन भूमि विद्या की राजधानी पुणे नगरी में चतुर्विद संघ के सान्निध्य में महाराष्ट्र प्रवर्तिनी चादर महोत्सव दिनांक 29.05.2024 को महाराष्ट्र गौरव पू. श्री गौतममुनिजी म.सा., सरल स्वभावी पू. श्री सौरभमुनिजी म.सा., उप-प्रवर्तक पू. श्री गौरवमुनिजी म.सा., वाणी भूषण पू. श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. आदि ठाणा 52 की अभूतपूर्व उपस्थिति में जय घोष के साथ संपन्न हुआ।

पू. श्री प्रतिभाश्रीजी म.सा. की दीक्षा नांदेड़ में हुई थी। तब से लेकर आज तक आपकी 52 वर्षों की तपस्या संयम यात्रा, देशभर में 16 शिष्याओं को दीक्षा संयम मार्ग धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए दिलाई। अपने देशभर के अनेकों राज्यों का विचरण करते हुए 40,000 किमी. से भी अधिक की पैदल यात्रा की है। आपका विचरण क्षेत्र महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि रहा है। आपका गुरु परिवार द्वारा कोटा संघ प्रमुखा, पुणे संघ द्वारा नवकार आराधिका, श्री जीवराजजी म.सा. द्वारा वि. वीरपुत्री, गुजराज विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट, प्रवर्तक पू. श्री रूपमुनिजी म.सा. 'रजत' द्वारा दक्षिण सिंहनी, प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषिजी म.सा. द्वारा महाराष्ट्र सिंहनी ऐसी अनेको पदवियों से विभूषित किया जा चुका है। आपने नवकार मंत्र में पी.एचडी. की उपाधि हासिल की है।

चेन्नई से श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ चातुर्मास समिति 2021 की तरफ से चादर ओढ़ाकर महासतीजी का बहुमान किया गया। समिति की तरफ से महावीरचंदजी कोठारी, रमेशजी ओस्तवाल, कमलजी गांधी, विजयराजजी गांधी, महावीरजी बाफना, शांतादेवीजी गांधी, सूरजबाईजी बोहरा की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्रीमान् प्रकाशजी धारीवाल जैन रहे। कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्रीमान् रमनलालजी लुंकड़ जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमीचंदजी चोपड़ा जैन, श्री पारसजी मोदी जैन के अलावा श्री विजयकांतजी कोठारी जैन, श्री पोपटलालजी ओस्तवाल जैन, श्री विलासजी राठौड़ जैन, श्री बालासाहेबजी धोका जैन, श्री अनिलजी नाहर जैन, श्री सुभाषजी लोढ़ा जैन, श्री राजेशजी नाहर जैन, श्री सुमतिलालजी लोढ़ा जैन, श्री सुधीरजी जैन, श्री संपतराजजी कोठारी जैन, श्री शांतिलालजी सिंघवी जैन, श्री मीठालाजी कांकरिया जैन, श्री धरमचंदजी गादिया जैन, श्रीमती सुनीताजी देसर्डा जैन, श्री पारसमलजी बाफना जैन, श्री वईसराजी रांका जैन, श्री विजयजी ओसवाल जैन आदि के अनेकों वरिष्ठ समाजसेवी एवं कार्यकर्ता मौजूद थे। **प्रेषक : बालासाहेब धोका जैन**

वीरशासन स्थापना दिवस के अवसर पर घोषणा
भगवान महावीर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर व महावीर कन्वेंशन सेंटर बनेगा

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ, तमिलनाडु के तत्वावधान एवं युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. की निश्रा में रविवार को पुरुषवाक्कम स्थित सीयू शाह भवन में सकल जै संघ की उपस्थिति में श्रद्धा व संकल्प के साथ 2581वाँ वीरशासन स्थापना दिवस मनाया गया। भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण कल्याणक वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित इस विशेष समारोह में जैन समाज ने चेन्नई में भगवान महावीर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर बनाने की घोषणा की। श्वेतांबर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगंबर सभी जैन संप्रदायों के प्रतिनिधियों, पदाधिकारियों, समाजसेवियों, विद्वानों और श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में महासंघ के चेयरमैन श्री अभयकुमारजी श्रीश्रीमाल जैन ने बताया कि इस महत्वाकांक्षी योजना के लिए वर्धमान नगर बनेगा, जिसमें भगवान महावीर कन्वेंशन सेंटर निर्मित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि मानवता की सेवार्थ इस कार्य के लिए सभा में ही सौ करोड़ रुपये का आश्वासन मिला है। युवाचार्यश्रीजी ने कहा कि जैन समाज के इन उपकारों के लिए आने वाली पीढ़ियाँ याद करेगी। जैन महासंघ के अध्यक्ष श्री प्यारेलालजी पितलिया जैन ने तन-मन-धन से साथ देने को कहा। सबकी सहभागिता में हर कार्य विधानानुसार एवं

उद्देश्यानुसार होगा। श्री ताराचंदजी दुग्गड़ जैन ने कहा कि तमिलनाडु में आज एक और नया इतिहास जुड़ने जा रहा है। महामंत्री श्री धर्मीचंदजी सिंघवी जैन ने बताया हमें अपने व परिवार, भावी पीढ़ी एवं साधर्मी भाईयों के लिए कार्य करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन श्री मदनलालजी गुंदेचा एवं धन्यवार श्री सुरेशजी लुणावत जैन ने ज्ञापित किया। सभा में श्री सुभाषजी रांका जैन, श्री कमलजी ठोलिया जैन, श्री किरीटी भाई पारेख, श्री महावीरचंदजी रांका जैन, श्री गौतमजी कटारिया, श्री अशोकजी सहित आदि सभी संप्रदायों के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। **प्रेषक : भीकमचंद लुंकड़ जैन**

जैतारण में गौ सेवार्थ विशाल आयोजन सम्पन्न
श्री सुनीलजी खेतपालिया की अध्यक्षता में 300 गौशालाओ को सहयोगराशि वितरण
खेतपालिया जैन गौरव से सम्मानित

जैतारण (राजस्थान) : दिनांक 19 मई को पाली जिले के अन्तर्गत श्री मरूधर केसरी पावन धाम जैतारण में आयोजित भव्य समारोह में श्री गुरु गणेश मिश्री सेवा समिति, चेन्नई के तत्वावधान व प्रवर्तक पू. श्री सुकनमुनिजी म.सा., उप-प्रवर्तक पू. श्री अमृतमुनिजी म.सा. आदि संत-सतीवृंद चतुर्विध संघ के सान्निध्य में प्रमुख अतिथि एम.एस. बिटटाजी एवं भामाशाह श्री सुनीलजी खेतपालिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत राजस्थान की 300 गौशालाओं को गौ संरक्षण हेतु विशाल सहयोग राशि वितरित की गई।

इसके अतिरिक्त क्षेत्र की चालीस प्रमुख विशाल गौशालाओं को पशु खाध सामग्री लोरियो के माध्यम से अतिरिक्त भिजवाई गई। इस अवसर पर प्रवर्तक पू. श्री सुकनमुनिजी म.सा. ने कहा कि यह सेवा जीवदया का कार्य अत्यंत उत्कृष्ट है। मनुष्य अपने नाम से नहीं काम से पहचाना जाता है, पैसे का सदुपयोग जो करता है वही यश-कीर्ति पता है। प्रमुख अतिथि एम. एस. बिट्टाजी ने कहा कि जैन समाज के हर बच्चे में बाल्यकाल से ही दया, भावना का गुण सम्माहित हो जाता है। जैन अपने कर्मों से पहचाना जाता है, देश में अपने सेवाकार्यों की अलग पहचान रखता है। कार्यक्रम के अध्यक्षीय भाषण में श्री सुनीलजी खेतपालिया ने कहा श्री गुरु गणेश मिश्री सेवा समिति-चेन्नई के तत्वावधान में जो कार्य सम्पन्न हो रहे हैं वह सराहनीय है। गुरु भगवंतों, पूर्वजों का आशीर्वाद है, हम तो माध्यम है। उन्होंने कार्यकम में अर्थ सहयोग देने वाले को धन्यवाद प्रेषित कर उनकी भावनाओं को नमन किया तथा भविष्य में इसी तरह साथ सहयोग देने की अपील की। इस अवसर पर उन्होने अधिक से अधिक जीवदया, मानव सेवा के अन्तर्गत कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा उपस्थित महानुभावों से भी गौशालाओं को विशेष संरक्षण संवर्धन हेतु तैयार रहने को कहा।

इस अवसर पर उप-प्रवर्तक पू. श्री अमृतमुनिजी म.सा., पू. श्री वरूणमुनिजी म.सा. समेत अनेक संतों व सज्जनों ने अपने विचार प्रकट कर कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस अवसर पर प्रवर्तक पू. श्री सुकनमुनिजी म.सा. व उपस्थित संत-सती मण्डल ने श्री सुनीलजी खेतपालिया को उनके उत्कृष्ट समाज के प्रति प्रभावी प्रकल्पों, अवदानो को देखते हुए जैन गौरव अलंकार से सम्मानित किया, जिसका करतल ध्वनि हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ सभा में हजारों की उपस्थिति ने अभिनन्दन किया। चेन्नई शहर से भी सोशल मीडिया के माध्यम से श्रीमान् खेतपालियाजी को बधाईयाँ देने का तांता लगा हुआ है। मंचासीन तथा उपस्थित गुरु गणेश मिश्री सेवा समिति के पदाधिकारी ने अपने हाथों से सहयोग राशि का वितरण किया। कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन, अल्पसंख्यक योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी ओस्तवाल जैन समेत क्षेत्रीय गांवों के सरपंचों, वरिष्ठ समाजसेवीयो, गौभक्तों की उपस्थिति रही है। श्री मीठालालजी पगारिया-अध्यक्ष श्री मरुधर केसरी जैन छात्रावास जैतारण ने कार्यक्रम का सम्पूर्ण लाभ लिया साथ ही सभी व्यवस्थाओं को संभालने में अग्रणी रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री गुरु गणेश मिश्री सेवा समिति के चेयरमैन श्री वॉइसराजजी रांका जैन, अध्यक्ष श्री सुरेशजी ललवानी जैन, उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी सिंघवी जैन, मंत्री श्री अशोकजी बोहरा जैन, कोषाध्यक्ष

श्री निर्मलजी मरलेचा जैन आदि का सहयोग सराहनीय रहा। कार्यक्रम में विशेष सहयोग श्री मरूधर केसरी जैन छात्रावास जैतारण के पदाधिकारीयों कार्यकर्ताओं का रहा। कार्यक्रम में राजस्थान के विभिन्न स्थानों अजमेर, ब्यावर, जोधपुर, पाली, नागौर, मेड़ता, किशनगढ़, जयपुर आदि क्षेत्रों से महानुभाव पधारे। कार्यक्रम का संचालन श्री हस्तीमलजी खटोड जैन ने किया।

प्रेषक : गौतमचंद दुग्गड़ जैन

महानगर प्रवेश एवं दीक्षार्थी अभिनन्दन कार्यक्रम सम्पन्न

पोरूर, चेन्नई (तमिलनाडु) : 26 मई को चेन्नई के उपनगर पोरूर में महासती पू. श्री राजमतीजी म.सा. आदि ठाणा 2 का एस.एस. जैन संघ पोरूर के तत्वावधान में कांकलिया परिवार द्वारा प्रायोजित महानगर प्रवेश एवं मुमुक्षु दीपिका का अभिनंदन समारोह हर्षोल्लास के साथ समारोह अध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन प्रमुख अतिथि, वरिष्ठ समाजसेवी श्री नवरत्नजी चोरड़िया जैन, वरिष्ठ समाजसेवी श्री अनोपचंदजी भिडकिचया जैन, वरिष्ठ समाजसेवी श्री नवरत्नमलजी मेहता जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री दिनेशकुमारजी भलगट जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री धर्मीचंदजी कांकरिया जैन, श्री प्रकाशजी खिंवसरा जैन-अध्यक्ष साहुकारपेट श्रीसंघ की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर महासती पू. डॉ. श्री प्रतिभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 का भी मंगल पदार्पण हुआ। भारी जनभेदनी की उपस्थिति में मुमुक्षु दीपिका की एक विशाल शोभायात्रा शुभम स्क्वायर से प्रारंभ होकर जैन मन्दिर के विशाल प्रांगण में पहुंचकर वहाँ धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। संघ अध्यक्ष श्री ललितजी सांखला जैन ने पधारें हुए अतिथियों का स्वागत किया।

महासती पू. श्री ऋषिताजी म.सा. ने इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि प्रत्येक व्यक्ति का ध्येय भौतिक सुखों को त्याग कर संयम पथ होना चाहिए। विदुषी महासतीजी ने कहा कि जैसे बुलडोजर बड़ी से बड़ी भारी इमारत को ध्वस्त कर देती हैं, उसी प्रकार संसार से विरक्ति, पापों का क्षय कर देती हैं। उन्होंने बताया कि सांसारिक व्यक्ति के विपरीत मुमुक्षु साधक का एकमात्र लक्ष्य स्वयं के कल्याण के साथ जगत के कल्याण की भावना होती हैं।

महासती पू. श्री विनयश्री म.सा. ने दीक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री आनन्दमलजी छल्लाणी जैन ने पोरूर संघ की अनुमोदना करते हुए साध्वीवृंद का नगर प्रवेश कर आहार-विहार स्वास्थ्य की सुख-साता पूछते हुए चेन्नई प्रवास, चातुर्मास तथा वैरागन बहन के संयम पथ पर आरुढ़ होने की मंगलकामनाएं प्रेषित की, कार्यक्रम में श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री विनयमुनिजी म.सा. 'भीम' के निर्देशानुसार पू. श्री सन्मतिमुनिजी म.सा. 'साहिल' का एक सन्देश भी पढ़कर सुनाया गया, जिसमें उन्होंने वैरागी बहन की कठिन साधना और प्रस्तावित दीक्षा के लिए मंगल भावना प्रकट की।

साहूकारपेट संघ के महामंत्री श्री संजयजी पीन्चा ने श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. द्वारा प्रेषित पत्र का भी वाचन किया, जिसमें उन्होंने मुमुक्षु दीपिका की 11-10-2024 को जैन भगवती दीक्षा साहूकारपेट संघ के तत्वावधान में आयोजन करने की आज्ञा प्रदान की तथा आज्ञा पत्र को मंचासीन महानुभावों द्वारा साध्वीजी के चरणों में सौंपा गया।

पोरूर संघ, साहुकारपेट संघ, गुरु ब्रज मधुकर श्रावक समिति सहित अनेक परिवारों ने इस अवसर पर मुमुक्षु दीपिका की खोल भरकर अभिनंदन किया। मुमुक्षु दीपिका दीक्षा मुहूर्त मिलने पर खुशी से भावुक हो गई और उन्होंने कहा कि आज ये सम्मान मेरा नहीं मेरे संयम जीवन का है। पोरूर संघ के महिला मंडल ने एक जीवंत नृत्य नाटिका द्वारा मुमुक्षु दीपिका का जीवन परिचय देते हुए उनके द्वारा अपनाए जाने वाले कठिन संयम पथ पर अग्रसर होने के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री एस.एस. जैन संघ पोरुर द्वारा आज के सम्पूर्ण कार्यक्रम के लाभार्थी श्री रमेशचंदजी, अरिहंतजी, अजीतजी कांकलिया परिवार का अभिनंदन किया गया। श्रीमती कमलाजी सज्जनराजजी मेहता जैन सहित अनेक वक्ताओं ने उद्‌गगार व्यक्त किये। इस अवसर पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ-तमिलनाडु के अध्यक्ष श्री सुरेशजी लुणावत जैन, महामंत्री श्री धर्मीचंदजी सिंघवी जैन, श्री एस.एस. जैन संघ अध्यक्ष श्री जेठमलजी चोरड़िया जैन, श्री किशनचंदजी छाजेड़ जैन, श्री सुरेशजी गुगलिया जैन, श्री जब्बरचंदजी बंब जैन, श्री जतनराजजी कांकरिया जैन, श्री ज्ञानचंदजी पोखरणा जैन, श्री महावीरचंदजी

पगारिया जैन, श्री देवीचंदजी बरलोटा जैन, श्री महावीरचंदजी भंडारी जैन, श्री देवराजजी कोठारी जैन, श्री पुखराजजी सांड जैन, श्री मुकेशजी गुगलिया जैन, श्री उत्तमजी भंसाली जैन, श्री अरविन्दजी रूणवाल जैन आदि उपस्थित रहे। संघ के मंत्री श्री प्रकाशचंदजी बम्ब जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री जुगराजजी बोरुंदिया जैन ने किया।

प्रेषक : प्रकाशचंद बंब जैन, मंत्री-श्री एस.एस. जैन संघ, पोरूर

बेलगांव में धूमधाम से मनाया गया अक्षय-तृतीया पर्व

बेलगांव (कर्नाटक) : जिनशासन गौरव, धर्मप्रभाावक पूज्य गुरुदेव श्री राजेशमुनिजी म.सा. 'श्रमण' तथा सेवाभावी पू. श्री ऋषभमुनिजी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में बेलगांव में अक्षय-तृतीया का पावन पर्व धूमधाम से मनाया गया। समस्त बेलगांव जैन समाज में व्याखन में साउथ से वापसी के समय एक चातुर्मास बेलगांव करने की पुरजोर विनंती श्रीचरणों में रखी। प्रवचन पश्चात गौतम प्रसादी के साथ-साथ इक्षुरस का जन-जन में सौहार्दपूर्ण वितरण रहा। इसके बाद बेलगांव से हुबली के लिए गुरुदेव की विहार यात्रा प्रारंभ हुई।

प्रेषक : राजेन्द्र कंठालिया जैन, बेलगांव

निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

मेरठ (उत्तर प्रदेश) : भीष्म पितामह, तपस्वी रत्न, राजर्षि, श्री सुमतिप्रकाशजी म. के सुशिष्य वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर पू. डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा., उत्तर भारतीय प्रवर्तक पू. श्री आशीषमुनिजी म. के पावन सान्निध्य में **'वर्तमान परिपेक्षय में संयुक्त परिवार की उपयोगिता'** विषय पर अधिकतम 500 शब्द निबंध प्रतियोगिता का आयोजन जैन कॉन्फ्रेंस उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड प्रांतीय शाखा द्वारा किया जा रहा है, जिसकी अंतिम तिथि 20 जुलाई है। स्थान जैन स्थानक, जैन नगर, मेरठ में कल्पवृक्ष द्वारा आयोजित की जा रही है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क : 94126 31006 (अजय जैन), 93193 13717 (विकास जैन)

प्रेषक : भास्कर जैन

शोक समाचार

पंडितरत्न उपाध्याय भगवंत पूज्य प्रवर श्री गुणवंतचंदजी म.सा. का देवलोक

पीपाड़ (राजस्थान) : साधना के शिखर पुरुष, घोर तपस्वी, अप्रतिम साधक पंडितरत्न, उपाध्याय भगवंत पूज्य प्रवर श्री गुणवंतचंदजी म.सा. (जयमल संप्रदाय) का संथारा सहित दिनांक 23.5.2024 को पीपाड शहर में देवलोकगमन का समाचार अत्यंत दुखद, मन को भाव विभोर करने वाला मिला। जैन समाज ने एक बहुमूल्य धीर वीर, गंभीर अणगार धरा से खो दिया। आप आडंबरों प्रदर्शनों दिखावों भौतिक संसाधनों से कोषो दूर भगवान महावीर स्वामी के शासन को गौरवान्वित जयवंत करने वाले विलक्षण संत रत्न थे। जैन संत की सम्पूर्ण परिभाषा आपमें झलकती थी। आपके तेजोमय गुणरत्नों को शब्दों में परिभाषित करना असंभव है। आपके श्रीचरणों में श्रद्धायुक्त भावों से वंदन करते है, आदरांजलि-श्रद्धांजलि-भावांजलि प्रेषित करते हुए प्रार्थना करते हैं, भव्य आत्मा अरिहंत स्वरूप को प्राप्त करते हुए सिद्ध शिला पर विराजमान हो तथा आपका दिव्य आशीर्वाद कृपा सदैव संघ समाज पर बरसती रहे।

पूज्या श्री क्षमाश्रीजी म.सा. का समाधिपूर्ण संथारा सहित देवलोक

आचार्य सम्राट् प. पू. श्री आनंदऋषि जी महाराज साहब की कृपापात्र, संस्कार भारती पूज्य श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. की बड़ी बहन प. पू. श्री मंगलप्रभाजी म.सा. एवं प. पू. श्री जयस्मिताजी म.सा. की माताजी महाराज साहब प. पू. श्री क्षमाश्रीजी म.सा. का समाधि पूर्ण संथारा सहित देवलोकगमन हो गया है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि प्रेषित करते हुए प्रार्थना करते हैं कि आपको सिद्धालय की प्राप्ति हो।

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि